सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 25/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

अगस्त, 2017 वर्ष 16 अंक 06

तैबा को जाने वालो

तैबा को जाने वालो, मक्के को जाने वालो
इम्कान में अगर हो, मुझको भी साथ ले लो
तैबा को जा रहे हैं, रौज़े पे होंगे हाज़िर
है नज़्म इस तरह का, तैबा हों पहले हाज़िर
तैबा पहुंच के पहले, सजदे करें ख़ुदा को
रौज़े पे फिर हों हाज़िर, राज़ी करें ख़ुदा को
अपना सलाम पढ़ कर, मेरा सलाम पढ़ दें
महबूबे किबरिया से, मेरा सलाम कह दें
मक्का पहुंच के जब वाँ, काबे के गिर्द घूमें
करना दुआ में शामिल, बन्दे को भी न भूलें
अरफ़ात में पहुंच कर, रब से दुआएं माँगें
अपने लिए भी मांगे, सबके लिए भी मांगें
उम्मत की आफ़ीयत की, वाँ पर दुआएं मांगें
कौमो वतन की ख़ातिर, लग कर दुआएं मांगें
रब से सलामो रहमत, वाँ भी नबी पे मांगें
सुन्नत पे इस्तिक़ामत, दिल से वहां पे मांगें

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
बातें हज और उमरे की	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	06
स्वतंत्रता दिवस	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	11
अस्हाबे रसूल और उनका मकाम	हज़रत मौलाना सय्यिद राबे हसनी नदवी	14
ईश भक्ति का अनुपम प्रदर्शन	डॉ0 मुहम्मद अहमद	19
प्रार्थना (पद्य)	इदारा	20
एहराम की हालत में	हज़रत मौलाना सय्यिद राबे हसनी नदवी	21
बातें नैतिकता की	हुसैन अहमद	22
हज की फरज़ीयत व अहम्मीयत	हज़रत मौलाना सय्यिद राबे हसनी नदवी	24
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	25
धन का शुद्ध प्रयोग कीजिए	मौ0 सय्यिद मुहम्मद हम़जा हसनी नदवी	29
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद	इदारा	30
पवित्र कुर्आन की मौलिक शिक्षाएं	हज़रत मौलाना सय्यिद राबे हसनी नदवी	31
इस्लाम अल्लाह के हुक्म का नाम	हज़रत मौलाना अली मियां रह0	37
नारी का पर्दा (पद्य)	इदारा	38
शिक्षकों की सेवा में (पद्य)	शिक्षक अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी	39
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-निसाः

अनुवाद–

जिन्होंने इनकार किया और पैग़म्बर की बात न मानी उस दिन वे चाहेंगे कि काश कि वे मिट्टी में मिला दिये गये होते और अल्लाह से वे कोई बात न छिपा सकेंगे(42) ऐ ईमान वालो! नशे की हालत में नमाज़ के निकट भी मत होना यहां तक कि तुम जो कहते हो उसको समझने लगो और न अपवित्रता (नापाकी) की हालत में जब तक कि तुम स्नान न कर लो सिवाय राह चलने के (कि उसका हुक्म आगे आता है) और अगर तुम बीमार हो या यात्रा पर हो या तुम में कोई शौच करके आया है या तुम पत्नियों के पास जा चुके हो फिर तुम्हें पानी न मिल सके तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर लो, बस अपने चेहरों और हाथों पर मसह कर लो (हाथ फेर लो) बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही क्षमा करने वाला है[1](43) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन को किताब का एक भाग दिया गया वे गुमराही ख़रीदते हैं और चाहते हैं कि तुम भी रास्ता भटक जाओ[2](44) और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है और अल्लाह काम बनाने के लिए भी काफ़ी है और अल्लाह मदद के लिए भी काफी है(45) जो यहूदी हैं वे बातों को अपनी जगह से इधर–उधर करते रहते हैं और कहते हैं कि हमने सुना और न माना और आप सुनें, सुन न सकें और ज़बान को मोड़ कर और दीन पर चोटें करते हुए "राइना" कहते हैं और अगर वही लोग यह कहते हैं कि हमने सुना और माना आप सुन लें और हमारा ख़्याल करें तो उनके लिए बेहतर और ठीक होता लेकिन अल्लाह ने उन को उनके इनकार के कारण अपनी कृपा से दूर कर दिया तो वह इक्का–दुक्का ही ईमान लाते हैं[3](46) ऐ ईमान वालो! जिनको किताब दी जा चुकी है, उस चीज़ पर ईमान ले आओ जिसे हमने उतारा जबकि वह उस चीज़ को भी सच बताती है जो तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम चेहरों को बिगाड़ दें फिर उनको पीछे फेर दें या उन पर वैसी ही फिटकार बरसाएं जैसी हमने सनीचर के दिन वालों पर फिटकार की और अल्लाह का आदेश तो लागू हो कर रहता है[4](47) और अल्लाह इसको माफ़ नहीं करता कि उसके साथ साझी ठहराया जाए और इसके अलावा जिसको चाहता है माफ़ कर देता है और जिसने अल्लाह के साथ साझी ठहराया तो उसने अवश्य बहुत बड़ा तूफ़ान बाँधा(48) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो अपनी पाकी झाड़ते हैं जब कि अल्लाह ही जिसको

चाहता है पाक (पवित्र) कर देता है और धागे के बराबर भी उनके साथ अन्याय नहीं किया जाएग(49) आप देखिए कि वे कैसे अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं और खुले पाप के लिए यही काफ़ी है(50) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब का एक भाग दिया गया फिर वे बुतों और तागूत (शैतान) को मनते हैं और काफिरों के बारे में कहते हैं कि वे ईमान वालों से अधिक सही रास्ते पर हैं(51) यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत (धिक्कार) की और जिस पर अल्लाह लानत (धिक्कार) करे तो आप उसका कोई मददगार न पाएंगे(52) या बादशाही में इनका कोई हिस्सा है तब तो यह लोगों को तिल बराबर भी न देंगे(53) या वे लोगों से उस बात पर हसद (ईर्ष्या) करते हैं जो अल्लाह ने उनको अपनी कृपा से दे रखा है तो हमने इब्राहीम की संतान को किताब व हिकमत दी और हमने उनको बड़ा भारी राज्य दिया(54)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. इस आयत में तीन आदेश बताए गए हैं, एक तो यह कि नशे की हालत में नमाज़ न पढ़ना, शराब उस समय तक हराम (वर्जित) नहीं हुई थी, उससे नफ़रत दिलों में बैठाई जा रही है, दूसरा आदेश यह दिया गया कि अपवित्रता (नापाकी) की हालत में नमाज़ न पढ़ना, जब तक स्नान (गुस्ल) न कर लो, और तीसरा आदेश तयम्मुम से संबंधित है कि अगर पानी न मिले या बीमारी के कारण उसका प्रयोग कठिन हो तो पाकी (पवित्रता) का साधन पवित्र मिट्टी को क़रार दिया गया, उस पर हाथ मार कर चेहरे पर फेर लिया जाए और दूसरी बार हाथ मार कर हाथों पर कुहनियों समेत फेर लिया जाए, वज़ू की ज़रूरत हो या गुस्ल की दोनों में तयम्मुम का तरीक़ा यही है।

2. यहां से यहूदियों का उल्लेख है।

3. यहूदियों का काम ही शरारत करना था, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मजलिस में आते तो ऐसा शब्द बोलते जिनमें बाहर कुछ होता भीतर कुछ होता, कहते कि हां हमने बात सुन ली फिर चुपके से कह देते कि मानी नहीं है, कहते आप सुन लें और "गैर मुस्मइन" भी कह देते कि सुनाया न जाए, कोई पूछता तो कहते कि कोई बुरी बात आपको सुना न सके और भीतर–भीतर दूसरा अर्थ उसका यह लेते कि कोई अच्छी बात आप न सुनें "राइन" (हमारा ख़्याल करें) कहते तो "राईना" खींच कर कहते जिसका मतलब है हमारे चरवाहे और यह इबरानी भाषा में गाली की तरह है अल्लाह तआला कहता है कि इनकी इन बदमाशियों के कारण अल्लाह ने इनको अपनी कृपा और हिदायत से वंचित कर दिया तो बहुत कम ही ईमान लाएंगे इतिहास भी इसका गवाह है कि क़ौमों में यहूदियों की क़ौम वह है जो सबसे कम मुसलमान हुए।

4. शुरु में अहले किताब से और विशेष रूप से यहूदियों

शेष पृष्ठ....13 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

अनावश्यक किसी को तकलीफ पहुंचाने की हुरमत एक बिल्ली को तकलीफ दे कर जान लेने की सजाः-

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया एक औरत बिल्ली की वजेह से अजाब की मुस्तहिक हुई, बिल्ली को क़ैद कर लिया न उसको खिलाया न पिलाया और न छोड़ ही दिया कि वह जमीन के कीड़ों ही से अपना पेट भरती, इसी लाहत में वह मर गयी पस वह औरत दोज़ख की सजावार हुई। (बुखारी—मुस्लिम)

किसी जानवर को अभ्यास पट न बनाया जायेः-

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि वह कुरैश के कुछ जवानों के पास से गुजरे जो एक जानवर को निशाना बना कर तीर मार रहे थे और उस जानवर के मालिक से यह शर्त थी कि जो तीर खता कर जाये वह तुम्हारा है जब उन्होंने हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 को देखा तो अलग अलग हो गये, हज़रत इब्ने उमर रज़ि ने कहा यह कौन है अल्लाह तआला उस पर लानत करे जिस ने यह काम किया है बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस शख़्स पर लानत की है जो किसी जानवर को अकारण निशाना बनाये।

(बुखारी—मुस्लिम)

लौंडी को तमाचा मारने पर आज़ाद करने का आदेशः-

हज़रत अबू अली सुवैद बिन मुकरिन से रिवायत है कि हम सात भाई थे और हमारे पास कोई खादिम न था सिर्फ एक लौंडी थी, हमारे सबसे छोटे भाई ने उसको तमाचा मारा तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम को आदेश दिया कि इस लौंडी को आज़ाद कर दो। (मुस्लिम)

अल्लाह तआला अपने गुलामों पर ज़ियादा कुदरत रखता हैः-

हज़रत अबू मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि मैं अपने गुलाम को कोड़े से मार रहा था अचानक मेरे पीछे से आवाज़ आई ऐ अबू मसऊद जान ले, मगर मैं गुस्से की हालत में आवाज़ पहचान न सका जब वह मेरे करीब आये तो मैंने देखा कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। फरमाते हैं कि ऐ अबू मसऊद रज़ि0 जान ले कि जितनी तुझ को इस गुलाम पर कुदरत है उससे कहीं जियादा अल्लाह तआला की तुझ पर कुदरत है, मैं ने अर्ज किया कि मैं अब कभी किसी गुलाम को न मारूंगा।

एक रिवायत में है कि मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह मैं अल्लाह के लिए इस को आजाद करता हूं, आपने

शेष पृष्ठ....13 पर

बातें हज और उमरे की

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

जनाब शाकिर साहिब (कल्पित नाम) बड़े नेक आदमी हैं तब्लीग़ी जमाअ़त वालों से सम्बन्ध है, नमाज़ के बड़े पाबन्द हैं, जब तब दो तीन दिन के लिए जमाअत में भी निकल जाते हैं।

इतना खेत है कि उस की पैदावार से साल भर का खाने पीने का खर्च चल जाता है और कुछ ग़ल्ला हर साल बचा भी लेते हैं। जिससे घर की दूसरी आवश्यकताएं पूरी होती हैं फिर भी कुछ बच रहता है, वह साहिबे निसाब हैं, हर साल रमज़ान में ज़कात का हिसाब करके ज़क़ात की रक़म मुस्तहक़ीन को पहुंचा देते हैं किसी मक्तब में कक्षा चार तक शिक्षा पाई थी।

उर्दू लिखना पढ़ना अच्छी तरह आता है, एक बेटा जवान है शादी हो चुकी है, दूसरा बेटा आठवीं क्लास का छात्र है, एक बेटी है जिसकी शादी हो चुकी है वह अपनी ससुराल में रहती है, बड़े बेटे की तालीम भी मक्तब ही तक रही अब वह खेती के कामों में लगन के साथ लग चुका है, शाकिर साहिब के पिता का देहान्त कई वर्षों पहले हो चुका है, बूढ़ी मां साथ है। शाकिर साहिब ने इस वर्ष हज का फार्म भरा था अलहम्दुलिल्लाह नाम आ गया , उन्होंने हज के सफर से पहले एक चाय पार्टी की व्यवस्था की उसमें क़रीबी रिश्तेदारों और दोस्तों को बुलाया, साथ में एक आलिमे दीन को भी दावत दी, नियत समय पर लोग आ गये आलिम साहिब भी आ गये और एक गोष्ठी (मजलिस) स्थापित हो गई शाकिर साहब खड़े हुए सब को सलाम किया और कहा जैसा कि आप लोगों को मालूम है कि मैं इस साल हज के सफर पर निकलने वाला हूं आप लोगों से दरख्वास्त है कि अगर आप के हक में मुझ से कोई ग़लती हो गई हो तो आप मुझे मुआफ़ फरमां दें और मेरे लिए दुआ करें कि मेरा हज आसान हो और अल्लाह तआला के यहां क़बूल हो, अब मैं मौलाना साहब से दरख्वास्त करता हूं कि वह मुझे हज से सम्बन्धित आवश्यक बातें बताएं जो मेरे काम आएं।

मौलाना साहब खड़े हुए सब को सलाम किया फिर मस्नून खुत्बा पढ़ने के बाद इस तरह बात शुरुअ़ की सबसे पहले मैं शाकिर साहब को मुबारकबाद देता हूं कि उन्होंने हज का इरादा किया और हज कमेटी से मंजूरी भी मिल गई। आपने हज से मुतअल्लिक ज़रूरी जानकारी जरूर हासिल कर ली होगी, मैं भी उन मालूमात को दोहराए देता हूं। मुझे मालूम है कि आप की फ्लाइट पहले मदीना तय्यिबा की है, आप पूरे रास्ते जितना हो सके दूरूद व सलाम पढ़ते रहने का एहतिमाम कीजिएगा, वहां पहुंच कर अपनी क़ियाम गाह हासिल करने के बाद नहा धो कर या कम से कम बावज़ू हो कर अल्लाह के नबी की मस्जिद

में हाजिरी दीजिएगा। मस्जिद में दुआ व दुरूद के साथ कदम रखें फिर अगर जमाअ़त की नमाज़ न होने जा रही हो तो फौरन दो रकअ़त नमाज़ पढ़ें फिर दुरूद व दुआ में मशगूल रहते हुए जमाअत की नमाज़ का इन्तिज़ार करें, हज के दौरान रौज़े पर हाज़िरी के औक़ात होते हैं जब भी हाजिरी का मौक़ा मिले रौजे पर हाजिर हो कर बाअदब सलाम पेश करें सलाम जो चाहें पढ़ें लेकिन मेरे नज़दीक सबसे अच्छा सलाम "अत्तहीयात" वाला है "अस्सलामु अ़लैक अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू"

पढ़ें, भीड़ के सबब इनतजामन किसी को ठहरने नहीं देते आप भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम करते हुए आगे बढ़ें और हज़रत अबू बक्र और हजरत उमर रज़ि को इस तरह सलाम करते हुए आगे बढ़ते रहें: अस्सलाम अलैक या खलीफत रसूलिल्लाह, अबू बक्र, अस्लामु अलैक या अमीरल मोमिनीन उमर रज़ि0।

इन दोनों हज़रात की क़बरें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र के पीछे हैं। आपको आठ रोज मदीना तय्यिबा में ठहराया जाएगा ताकि आप चालीस फर्ज़ नमाज़ें प्यारे नबी की मस्जिद में अदा कर सकें।

आप मदीना तय्यिबा में पूरा वक़्त इबादत में गुज़ारें और ज़ियादा वक़्त मस्जिद में गुजारें, खूब नफ्लें पढ़ें, तिलावत करें दुरूद पढ़ें और जब भी मौक़ा मिले रौज़े पर हाज़िर हो कर सलाम पढ़ें, जिन लोगों ने सलाम कहलाया हो आप कहें कि जिन जिन लोगों ने मुझ से सलाम पहुंचाने को कहा है उन सब की तरफ़ से सलाम अर्ज़ करता हूं। किसी रोज़ इशराक़ के बाद ज़ियारत को जाएं, उहुद के शहीदों को सलाम कर आएं, मस्जिदे कुबा में दो रकअत नमाज़ पढ़ आएं, जन्नतुल बकीअ़ के लोगों को सलाम कर आएं, उनके लिए दुआए मगफिरत करके अपनी मग़फिरत का सामान करें, मस्जिदे किबलतैन में भी दो रकअ़त नमाज पढ़ आयें।

जब आप मदीना तय्यिबा से रवाना हों तो आप को दुख हो दुरूद व सलाम के साथ रवाना हों जुल हुलैफ़ा (जिस को बिअरे अली भी कहते हैं) पहुंच कर आपको एहराम बांधने का मौक़ा दिया जाएगा, यहां एक खासी बड़ी मस्जिद है और बहुत से ज़नाने व मर्दाने बैतुल ख़ला और गुस्ल खाने हैं। अब आप पाखाना पेशाब से फ़ारिग़ हो कर नहा धो कर सिले कपड़े अलग करके एहराम की चादरें पहन लेंगे। लेकिन अभी आप एहराम में नहीं हैं।

हज की तीन किस्में हैं, क़िरान, इफ़राद और तमत्तो (तमत्तुअ़) क़िरान और इफराद में पाबन्दियां ज़ियादा हैं इसलिए हमारे यहां के लोग तमत्तो हज करते हैं, इस हज में पहले उमरा किया जाता है, फिर एहराम उतार देते हैं और 8 जिलहिज्जा को हज का एहराम बांध कर हज पूरा करते हैं, आप को भी तमत्तो हज करना है। इसलिए दो रकअत नमाज़ पढ़ें, इस नमाज़ में ऊपर वाली चादर से सर ढके रखिए, सलाम फेर कर नीयत कीजिए ऐ अल्लाह मैं

उमरे की नीयत करता हूं मेरे लिए उमरा करना आसान फ़रमा, अब चादर सर से हटा दीजिए और आवाज़ से लब्बैक पढ़िये, लब्बैक तो आपने याद ही कर ली होगी? शाकिर साहब ने जवाब दिया लब्बैक अच्छी तरह याद है, मौलाना की बात फिर शुरु हुई, अब आप एहराम में हैं, एहराम की पाबंदियां करना होंगी, सर खुला रहे, सिले कपड़े न पहनें न मोज़े न दस्ताने न अंडर वियर, पैरों में हवाई चप्पल पहने, न बाल काटें न उखाड़ें, न नाखुन काटें न खुशबू लगाएं, जुएं चीलर भी न मारे, किसी से लड़ाई झगड़ा न करें वगैरह, लब्बैक खूब पढ़ें अब आप की सवारी आप को मक्का मुकर्रमा पहुंचाएगी रास्ते में खाने पीने और नमाज़ पढ़ने का मौक़ा दिया जाएगा। मक्का मुकर्रमा पहुंच कर अपनी कियाम गाह हासिल करने के बाद हो सके तो नहा धो कर वरना बावज़ू हो कर लब्बैक पढ़ते हुए हरम शरीफ़ पहुंचें, हरम में भी मस्जिद में दाखिले वाली दुआ और दुरूद के साथ दाखिल हों, यहां तहीयतुल मस्जिद न पढ़ेंगे, आगे बढ़ें काबा नज़र आते ही ख़ूब दुआएं करें और अगर किसी वक्त की जमाअत हो रही हो तो उसमें शरीक हो जाएं वरना मालूमात करके हजरे अस्वद के पास या उसकी सीध में आएं लब्बैक कहना बन्द कर दें तवाफ की नीयत करें ऐ अल्लाह मैं तवाफ की नीयत करता हूं मेरे लिए तवाफ़ आसान कर, फिर हजरे अस्वद का इस्तिलाम करें यानी उस को बराहरास्त बोसा दें, या हाथ से छू कर हाथों को बोसा दें, भीड़ में दूर से उस की तरफ हाथ उठा कर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर तवाफ़ शुरुअ़ करें, याद रहे तवाफ में वुज़ु ज़रूरी है तवाफ करते वक्त आप ऊपर की चादर दाहने शाने के नीचे (बग़ल) से निकाल कर बाएं शाने पर डालें और तवाफ करते वक़्त तीन चक्करों में जरा अकड़ कर चलें ऐसा करना सुन्नत है, काबे के सात चक्कर लगाएं, हर चक्कर में हजरे अस्वद के सामने आएं तो उसका इस्तिलाम पहले की तरह करें। तवाफ के चक्करों में खूब दुआएं मांगे, या कुर्आन की सूरतें पढ़ें, दुआ उर्दू में मांगे चाहे अरबी में जाइज दुआएं मांगे, खास तौर पर हजरे अस्वद और रुकने यमानी के बीच में जब आएं तो रब्बना आतिना फिददुन्या हसनतंव व फिल आखिरति हसनतंव व किना अज़ाबन्नार पढ़ें हजरे अस्वद से पहले वाला कोना रूकने यमानी कहलाता है।

जब सात चक्कर पूरे हो गये तो आप का तवाफ़ पूरा हो गया तवाफ के दौरान अगर किसी वक्त की जमाअत शुरूअ़ हो जाए तो जमाअत में शरीक हो जाएं और सलाम फेरते ही उठ कर बाक़ी चक्कर पूरे करें। अब आप जहां जगह मिले दो रकअत नमाज़ पढ़ें यह नमाज़ वाजिब है, फिर ज़म ज़म पियें और खूब पियें और खूब दुआएं करें।

अब आप मामूलात करके सफा पहाड़ी पर जाएं वहां सई की नीयत करें और चौथा कल्मा पढ़ें और सफा से मर्वा की तरफ चलें थोड़ी

दूर चलने के बाद दो हरी बत्तियां मिलेंगी उनके बीच दौड़ कर या भीड़ हो तो ज़रा तेज़ चलें यहां तक कि मरवा पहाड़ी पर पहुंचे यह आप का एक शौत (चक्कर) हो गया इसी तरह मरवा से सफा आएं यह दो चक्कर हुए इस तरह सात चक्कर पूरे करें इसको सई करना कहते हैं। सई में भी खूब दुआएं मांगे, अब आप बाहर निकल कर नाई की दुकान पर पूरे सर के बाल मुंडा दें या कतरवा दें अब आप हलाल हो गये यानी एहराम से बाहर आ गये अपने आम कपड़े पहन लें, अपनी कियाम गाह पर आ जाएं और अल्लाह आपको जितनी तौफीक़ दे हरम शरीफ में हाज़िर हो कर तवाफ कीजिए हरम में जमाअत के साथ नमाज़ें पढ़िये, तिलावत कीजिए, दुआएं कीजिए दुरूद पढ़िये ज़म ज़म पीजिए, काबे को देख कर सवाब लीजिए, यह सारे काम जारी रखिए यहां तक कि आठ ज़िलहिज्ज आ जाए, अब आप फिर नहा धो कर या कम से कम वज़ू कर के सिले कपड़े उतार कर एहराम की चादरें पहन लीजिए और पहले की तरह दो रकअत नमाज़ पढ़ कर नीयत कीजिए ऐ अल्लाह में हज की नीयत करता हूं मेरे लिए हज करना आसान फरमा और सर खोल कर पहले की तरह लब्बैक पढ़िये।

अब आप को हज के पांच दिन बड़ी चौकसी से बिताने हैं एहराम की पाबन्दियां आप पर पहले की तरह हैं, आठ जिलहिज्ज को आप सब के साथ मिना जाएंगे, खूब लब्बैक पढ़ेंगे, खूब दुआएं करेंगे, मिना के खेमें में जुहृ, अस्र, मगरिब, इशा फिर नौ की सुब्ह को फज्र की नमाज़ जमाअत से पढ़ना है। नौ जिलहिज्ज को आप अरफात के मैदान जाएंगे, मिना में आप को खेमा मिला था अरफ़ात में भी खेमा मिलेगा, अरफ़ात में जुहृ व अस्र की नमाजें जमाअत से पढ़ेंगे खूब दुआं करेंगे लब्बैक भी पढ़ेंगे अरफ़ात में नो तारीख को हाज़िरी के लिए पहुंचना फर्ज है, जब सूरज गुरूब हो जाएगा तो मग़रिब की नमाज़ पढ़े बिना अरफ़ात से मुजदल्फा को रवांगी होगी, मुजदल्फा में कोई खेमा न मिलेगा जिसको जहां जगह मिलती है ठहर जाता है, मुजदल्फ़ा में पहुंच कर मगरिब व इशा की नमाज़ अपने गुरूप के साथ जमाअत से अदा करेंगे और रात दुआओं में गुजारेंगे, नींद भी पूरी करेंगे, सुब्ह की नमाज़ पढ़ कर ज़रा ठहरेंगे इस को वकूफ मुजदल्फ़ा कहते हैं यह वाजिब है, अब मिना के खेमे को रवाना होंगे साथ में कम से कम 50 कंकरियां रमी के लिए चुन लेंगे, मिना पहुंच कर सात कंकरिया ले कर जमरात जाएंगे वहां सबसे आखिरी जमरा यानी बड़े शैतान को एक एक करके बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर पढ़ कर सातों कंकरियां मारेंगे, इसको रमी करना कहते हैं यह वाजिब है, रमी करने से पहले लब्बैक पढ़ना बन्द कर देंगे, रमी में यहां के जिम्मेदारों के ज़ाबितों की पाबन्दी न करने पर हादिसे हो जाते हैं। लिहाजा वहां के ज़ाबितों की पाबन्दी ज़रूर करें।

अब मनहर जा कर कुर्बानी करेंगे या किसी के

ज़रिये कुर्बानी करवा देंगे या बैंक के जरिए कुर्बानी का नज़्म करेंगे, जब यक़ीन हो जाए की कुर्बानी हो गई तो सर मुंडा कर या कतरवा कर हलाल हो जाएंगे, अब मामूल के कपड़े पहन कर हरम जा कर तवाफे ज़ियारत करेंगे यह तवाफ़ फ़र्ज़ है, इस तवाफ़ के बाद आपको सई करना है इसलिए इसके तीन चक्करों में अकड़ अकड़ कर चलेंगे यानी रमल करेंगे, अब आप मिना के खेमे में वापस आ जाएंगे और 11 जिलहिज्ज को जुह्र के बाद 21 कंकरियां ले कर रमी करने को जमरात जाएंगे, और वहां पहले छोटे शैतान को एक एक कर के सात कंकरिया मारेंगे, फिर आगे बढ़ कर बीच वाले शैतान को एक एक कर के सात कंकरिया मारेंगे, फिर आगे बढ़ कर बड़े शैतान को उसी तरह सात कंकरिया मारेंगे, यह ग्यारह की रमी हुई इसी तरह 12 की रमी करेंगे और बारह को मिना छोड़ कर मक्के की कियाम गाह पर आएंगे और वापसी की तारीख का इन्तिज़ार करेंगे। जब तक वहां रहें अल्लाह तआला जितनी तौफीक़ दे हरम जा कर तवाफ करें और नमाज़ें पढ़ें दुआएं करें ज़म ज़म पिएं, रवानगी से पहले फिर हरम जा कर तवाफ करें यह तवाफ़े वदाअ़ वाजिब है अल्लाह आपके हज को क़बूल फरमाए।

मैंने हज व उमरे की हर तरह की बातें बयान करने से गुरेज़ किया है उन्हीं बातों का ज़िक्र किया है जो आपको करना हैं अब कुछ और ज़रूरी बातें भी सुन लीजिए। आठ जिलहिज्ज को अगर आप को मक्के में रहते हुए 15 दिन हो गये हैं तो आप मुकीम हैं मिना, अरफ़ात और मुजदलफ़ा में 4 रकअत वाली नमाज़ पूरी पढ़ेंगे, लेकिन अगर आप को 8 ज़िलहिज्ज तक मक्के में रहते हुए 15 दिन से कम मिले हैं तो आप मुसाफिर हैं और मिना अरफ़ात और मुज़दलफ़ा में 4 रकअ़त वाली नमाज 2 रकअत पढ़ेंगे यानी क़स्र करेंगे यह हमारे हनफ़ी उलमा का फ़ैसला है, सऊदिया के उलमा मिना अरफ़ात और मुजदलफ़ा में क़स्र का हुक्म देते हैं, आप तो अपने ख़ेमे वालों के साथ जैसे वह नमाज़ पढ़ें आप भी जमाअत से नमाज़ पढ़ें यह मालूम रहे कि मुअल्लिम की तरफ से मिना और अरफ़ात में खेमों का नज़्म होता है अलबत्ता मुजदलफ़ा में नज़्म नहीं होता इसी तरह कियाम गाह से मिना और मिना से अरफ़ात जाने का और अरफ़ात से मुज़दलफ़ा जाने का नज़्म मुअल्लिम की तरफ से होता है लेकिन मुजदलफा से मिना और 12 तारीख को मिना से अपनी कियाम गाह आने में इतनी भीड़ होती है कि मुअल्लिम बेचारा कुछ नहीं कर पाता खुद से करना पड़ता है, यह भी मालूम रहे कि इन तीनों जगहों पर पाख़ाना पेशाब के लिए और पानी का अच्छा इन्तिज़ाम होता है अल्लाह तआला आप का हज आसान फरमाये और आप ख़ैर व आफीयत के साथ वापस आएं और हम लोग आप का इस्तिक़बाल करें और आप से दुआएं लें, इस के बाद लोगों ने नाश्ता खाया चाय पी और अपने अपने घरों को रवाना हो गये। ◆◇◆

स्वतंत्रता दिवस

—मुहम्मद गुफ़रान नदवी

स्वतंत्र भारत के इतिहास में 15 अगस्त एक महत्वपूर्ण तिथि है, 15 अगस्त 1947 को हमारा देश अंग्रेज़ी साम्राज्य से मुक्त हुआ, स्वतंत्रता प्राप्त करने में दीर्घ काल तक अंग्रेज़ों से एक लम्बा संघर्ष चला, इस संघर्ष में लाखों इन्सान मौत की भेंट चढ़ गए, कितनों को फांसी की सज़ा हुई, कितनों को काले पानी की सज़ा सुनाई गई कितनों को तोप के दहाने में बांध कर उड़ाया गया, यह एक दर्दनाक कहानी है जिसका सही अन्दाज़ा हमारी नई पीढ़ी के लोग नहीं कर सकते, सच्ची बात यह है कि देश की आज़ादी प्राप्त करने के लिए बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ी, हमारे पूर्वजों की ज़बरदस्त क़ुर्बानी और बड़ा बलिदान इस स्वतंत्रता संग्राम में शामिल है, स्वतंत्रता सेनानियों की हमारे सामने बड़ी लंबी सूची है। इस छोटी सी पत्रिका में संभव नहीं कि उन सेनानियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाए। इस समय हम केवल उन महान व्यक्तियों का उल्लेख करेंगे जिनका नाम इतिहास में उज्जवल है, उन्होंने अपने कारनामों से दुनिया के इतिहास में अपना विशेष स्थान बनाया और इस प्रकार वह अपने बाद के आने वालों के लिए मार्ग दर्शक बने। सबसे पहले अंग्रेज़ों के ख़तरे को जिसने महसूस किया और भांपा वह मैसूर (करनाटक) के राजा फतेह अली ख़ाँ सुल्तान टीपू थे, उन्होंने देखा कि अंग्रेज़ अपनी चालाकी और राजनीति से एक के बाद एक प्रान्त पर क़ब्ज़ा करते जा रहे हैं, इस प्रकार सम्पूर्ण देश उनकी मुट्ठी में चला जायेगा, टीपू सुल्तान ने अपने समकालीन राजाओं, महाराजाओं को इस ख़तरे से आगाह किया और कहा कि जिस तेज़ी के साथ अंग्रेज़ देश के विभिन्न क्षेत्रों पर अपना अधिकार जमाते जा रहे हैं, आवश्यकता है कि हम सब एक जुट हो कर एक सामूहिक संगठन बना कर उनका मुक़ाबला करें, इस संबन्ध में न केवल उन्होंने देश के राजाओं को अंग्रेजों से लड़ने पर आमादा किया बल्कि विदेश के मित्र शासकों से पत्र व्यवहार किया, बहर हाल बड़ी वीरता और सैनिक दक्षता के साथ टीपू सुल्तान ने अंग्रेज़ों से युद्ध किया जिस का लोहा सबने माना, परन्तु चालाक अंग्रेज़ों ने दक्षणी भारत के कुछ अमीरों को अपने साथ मिला लिया जिसके कारण भारत वर्ष का एक वीर सपूत संरंगापटम के मैदान में 4 मई 1799 में शहीद हो गया। उन्होंने अंग्रेज़ों की अधीनता स्वीकार न करके एक स्वाभिमान वीर की मौत को प्रमुखता दी और सदैव के लिए जीवित हो गये। इतिहास में उनका यह वचन प्रसिद्ध हो गया "गीदड़ की सद साला ज़िन्दगी से शेर की एक दिन की ज़िन्दगी अच्छी है"।

जब अंग्रेज़ जनरल हार्स को सुल्तान टीपू की शहादत की ख़बर मिली तो उसने उनकी लाश पर खड़े हो कर यह शब्द कहे कि:

"आज से हिन्दुस्तान हमारा है"

अंग्रेज़ जनरल के इन शब्दों में कितनी वास्तविकता थी, इतिहास आपके सामने है– गांधी जी ने अपनी पत्रिका "यंग इण्डिया" में सुल्तान टीपू की बड़ी प्रशंसा की और देश प्रेमी की हैसियत से सराहना करते हुए लिखा था "वतन और क़ौम के शहीदों में उन से बलन्द मरतबा कोई न था"। फतेह अली खाँ सुल्तान टीपू ने अपनी शहादत से देश वासियों को पैग़ाम दिया कि इज्ज़त के साथ रहो और इज्ज़त के साथ मरो। अंग्रेज़ों का अत्याचार बढ़ता जा रहा था, भारत को दो प्रकार से नुक़सान पहुंचा रहे थे, भारत जैसे धनवान देश का पूर्ण रूप से शोषण कर रहे थे, दूसरे यहां की एकता और भाई चारे के माहौल को नष्ट भ्रष्ट कर रहे थे। जिसके परिणाम स्वरूप यहां की हिन्दू मुस्लिम जन्ता एक जुट हो कर भारत के अन्तिम सम्राट बहादुर शाह ज़फ़र के नेतृत्व में अंग्रेज़ों के विरुद्ध अलमे बग़ावत बलन्द किया, परन्तु उचित व्यवस्था की कमी और ग़लत नीति की वजह से भारतीय सेना प्राजित हो गई, सम्राट के कई लड़कों के सर क़लम कर दिये गये और बहादुर शाह को बन्दी बना कर रंगून में क़ैद कर दिया गया जहां बड़ी बेकसी की हालत में उन की मौत हो गई। अंग्रेज़ों ने जुल्म और ज़ियादती की छाया में अपना शासन भारत में स्थापित कर दिया, परन्तु राष्ट्र प्रेमियों और वतन प्रेमियों ने दिल से उनके शासन को स्वीकार नहीं किया और स्वतंत्रता के लिए अपना आन्दोलन जारी रखा, यहां तक ब्रिटिश साम्राज्य ने अपने घुटने टेक दिये, और अपने अन्तिम वाइसराये लार्डमाउन्टविटन द्वारा आज़ादी का परवाना दे दिया। 15 अगस्त 1947 को लालक़िले पर तिरंगा झण्डा लहराया गया। स्वतंत्र भारत के सबसे पहले गवर्नर जनरल गोपाल आचार्या बने जनवरी 1948 में जब भारत का संविधान तैयार हो गया तो सर्व प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद बनाए गये, और उप राष्ट्रपति डॉ0 राधा कृष्नन। इसी प्रकार सर्व प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू हुए। यह स्वतंत्रता दिवस जो बड़ी कुर्बानी और बलिदान से प्राप्त किया गया यदि हम ने इसकी महत्ता और मूल्य को न समझा तो देश ख़तरे में आ जायेगा, देश की शक्ति का रहस्य यहां की एकता और भाईचारे में है, भारत वर्ष ऐसा देश है जिसमें नाना प्रकार की जातियां और नाना प्रकार के धर्म हैं भारतीय संविधान का निर्माण इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए किया गया। देश के हर वर्ग को इसका अधिकार है कि वह अपनी सामाजिक और धार्मिक विशेषताओं के साथ रहे, स्वतंत्रता का यह अर्थ नहीं कि दूसरों के अधिकारों का हनन हो, और दूसरों को कष्ट दिया जाये, अनेकता में एकता इसी रूप में बाकी रह सकती है, हमारा देश एक चमन और फुलवारी के

समान है जिसमें भिन्न–भिन्न प्रकार के फूल होते हैं, फुलवारी की शोभा इसी भिन्नता में है। भारत एक विशाल देश है इसकी विशालता उसी समय तक स्थिर रह सकती है जब तक एक दूसरे का आदर सम्मान होगा और समानता होगी, "फूट डालो और हुकूमत करो" यह अंग्रेज़ों की नीति थी, हमें इससे दूर रहना चाहिए।

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दुस्तां वालो
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें.....

फरमाया अगर तुम ऐसा न करते तो आग की लपट से महफ़ूज़ न रहते। (मुस्लिम)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो अपने गुलाम पर बेकसूर हद कायम करे या तमाचा मारे तो उस का कफ्फारा यह है कि उसको आज़ाद कर दे। (मुस्लिम)

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा.....

को संबोधित किया गया है और उनको पवित्र कुर्आन पर ईमान लाने का निमंत्रण दिया जा रहा है और परिचित कराने के लिए यह भी बताया जा रहा है कि, पवित्र कुर्आन में पिछली आसमानी किताबों की पुष्टि है, फिर न मानने पर डराया भी जा रहा है कि जिस तरह सनीचर के दिन बात न मानने वालों की सज़ा हुई वैसी ही तुम्हें सज़ा दी जा सकती है। (यह पूरी घटना सूरह अ़अ्राफ आयत नं. 163 में आएगी) फिर यहूदियों के हसद जलन का उल्लेख है कि मुसलमानों से दुश्मनी में वे इस हद तक चले गए कि मक्का के मुश्रिकों के बारे में कहने लगे कि यह मुसलमानों से ज़ियादा बेहतर रास्ते पर हैं जब कि वे खूब जानते थे कि मक्के के लोग मूर्ति पूजक हैं और किसी आसमानी किताब पर ईमान नहीं रखते लिहाज़ा उनके धर्म को बेहतर क़रार देना मूर्ति पूजा की पुष्टि है, इससे बढ़ कर अभिशाप वाला काम क्या होगा? फिर उनकी कंजूसी का उल्लेख है, फिर अंत में कहा जा रहा है कि सब इब्राहीम की संतान तो हैं तो यह जलन कैसा और इब्राहीम ही की संतान को तो अल्लाह ने हर युग में सम्मानित किया है, एक जमाने तक उनके एक बेटे इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की संतान में पैग़म्बर होते रहे अब उनके दूसरे बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की संतान में अल्लाह ने पैग़म्बरों के सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पैदा किया, और पैगम्बर बनाया, अल्लाह का काम है जिसको चाहे सम्मानित करे किसी और को इसमें क्या अधिकार?

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

अस्हाबे रसूल और उन का मकाम व मरतबा

(नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों का स्थान और उन की श्रेष्ठता)

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —हिन्दी इम्ला हुसैन अहमद

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी अर्थात सहा—बए—किराम रज़ि0 अपने ईमान की दृढ़ता तथा शुद्धता में मानवीय इतिहास में पृथक हैं, अल्लाह तआला के अन्तिम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन को ऐसा प्रशिक्षित किया था कि उन के जीवन के सभी भागों में ईमान रच बस गया था और अल्लाह के स्मरण की वह दशा उत्पन्न हो गई थी कि उनके कार्य फिरिश्तों जैसे होने लगे थे परन्तु अल्लाह ने मनुष्य को दुन्या के कामों और दीन के कामों को एक साथ करने तथा इन कामों में अपना अधिकार प्रयोग करने की जो योग्यता दी है वह फिरिश्तों को नहीं दी है इसी प्रकार मानव जाति की परीक्षा ली गई और मानवीय इतिहास में विभिन्न कालों में इस परीक्षा में सफलता प्राप्त करने की ओर तवज्जु दिलाई गई और सफलता के इस प्रयास में बड़े पुरस्कारों का वचन दिया गया। अल्लाह के सभी नबी अपने मानने वालों को सदैव सफलता प्राप्त करने की ओर तवज्जु दिलाते रहे हैं।

अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों को ऐसी तवज्जु दिलाई और प्रशिक्षित किया कि वह अल्लाह और उसके रसूल के आज्ञा पालन तथा अनुकरण का आदर्श बन गए और यह सब अल्लाह तआला के आदेश और उस की मर्जी से हुआ।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तौहीद और ईमान (एकेश्वरवाद और शुद्ध विश्वास) की दावत इस प्रकार दी कि जिस ने भी सुना उसके दिल में दावत की बात उतर गई और उस पर उसका ईमान (विश्वास) सुदृढ़ हो गया। आप का चरित्र आप की मानवीय सहानुभूति और आप का प्रेम ऐसा था कि जिसने भी आप को करीब से देखा और आप की बातें सुनीं वह केवल प्रभावित ही नहीं हुआ अपितु तनमन से आप का अनुकरण करने वाला बन गया और आप पर निछावर होने के लिए तैयार हो गया यह दशा केवल दो चार की नहीं हुई अपितु जिस ने भी आप की बातें सुनीं आप की संगत अपनाई उस की यही दशा हो गई। अतएव आप की 23 वर्षीय जीवनी में इस प्रकार की एक ऐसी बड़ी जमाअ़त (दल) तैयार हो गई जिस का उदाहरण मानवीय इतिहास में नहीं मिलता यही जमाअ़त अल्लाह के नबी के दुन्या से चले जाने के पश्चात उन की प्रतिनिधि बनी इस जमाअ़त पर इस्लाम को चलाते रहने की जिम्मेदारी डाली गई

और सहाबा की जमाअ़त ने उस जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ पूरा किया उन के सामने केवल अल्लाह की प्रसन्नता और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रेम और आखिरत (अगले जीवन) की बातें थीं जिसे उन लोगों ने तन मन से स्वीकार किया था अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो भी ईमान लाया वह धनवान हो गया निर्धन ऊँचे कुल का होता या निर्बल परिवार का उस में ऐसा ही सुदृढ़ विश्वास पैदा हो जाता और उस की यह दशा हो जाती कि इस्लाम के सहयोग और उस की सुरक्षा और अल्लाह की प्रसन्नता के लिए अपने प्राण निछावर करने में उस को कोई हिचकिचाहट न होती तमाम सहाबा जो पहले अपनी मर्जी और इच्छा की पूर्ति में चाहे जितने कठोर रहे हों परन्तु अब आप की मर्जी के सामने अपनी मर्जी को निछावर कर देते और अल्लाह के नबी की मर्जी के अनुकूल ही काम करते।

जो भी अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाता अल्लाह के नबी की मर्जी पर अपनी मर्जी निछावर कर देता, इसका एक बड़ा उदाहरण सुल्हे हुदैबिया में सहा–बए–किराम का मक्के के कुरैश की जालिमाना (अत्याचारी) शर्तों को मान लेना है और आप की मर्जी के सामने झुक जाना है, इसी प्रकार ग़ज़–वए–ख़न्दक के अवसर पर तीन हफ़्तों तक भूक प्यास तथा कठोर ढन्डक सहन करते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मर्जी के अनुकूल जमे रहना है। इसी प्रकार ग़ज़–वए–उहुद में जब विरोधी प्राजय हो कर भागने लगे और यह देख कर पहाड़ी पर नियुक्त सुरक्षा दस्ता के कुछ लोग नीचे उतर आए उस समय उचित अवसर पा कर शत्रुओं ने पलट कर आक्रमण कर दिया और मुस्लिम सेना तितर बितर होने लगी तथा थोड़े समय के लिए हल चल मच गई तो आप के गिर्द हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर जैसे सहा–बए–किराम रज़ि0 जम कर मुकाबला करने लगे और आप की सुरक्षा में दसियों जांनिसार (अपने प्राणों की आहुति देने वाले) सहाबा आप के गिर्द आ गए और शत्रुओं के वार अपनी छाती पर सहने लगे ताकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुरक्षित रहें। हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह रज़ि0 ने अपना हाथ सामने कर के तीरों को रोकना आरंभ कर दिया जिससे उन की सब उंगलियां घायल हो गईं इस से उन का हाथ मफ्लूज (अपाहिज) हो गया। खोद की दो कड़ियां नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे में प्रवेश कर गईं थी हज़रत उबैदुल्लाह बिन जर्राह ने अपने दांतों से पकड़ कर एक कड़ी को निकाला मगर साथ में उन का एक दांत भी बाहर आ गया मगर उन्होंने इसी तरह दूसरी कड़ी को भी खींचा तो दूसरा दांत भी बाहर आ गया, हज़रत अबू दुजाना ढाल बन कर आपके सामने खड़े हो गए तीर उन पर गिरते रहे परन्तु वह आप के बचाव में बराबर आप पर

झुके रहे यहां तक कि उन की पीठ तीरों से छलनी हो गई।

(सीरते इब्ने हिशाम:2/417)

ग़ज़–वए–उहुद के बाद मुसलमान मदीना पहुंचे तो रास्ते में बनी दीनार की एक खातून के मकान पर उन का गुजर हुआ, जिस के बाप, भाई और शौहर इस लड़ाई में शहीद हो गए थे, उस ने मुसलमानों से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाल पूछा लोगों ने खबर दी कि आप के बाप शहीद हो गए उस ने फिर कहा अल्लाह के नबी की खैरियत बताओ, किसी ने खबर दी कि आप का भाई शहीद हो गया उसने फिर पूछा अल्लाह के नबी की खैरियत बताओ, किसी ने खबर दी कि आप का शौहर शहीद हो गया। इन तीनों दुखद सूचनाओं के पश्चात उसने फिर कहा अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमकी खैरियत बताओ लोगों ने बताया खैरियत से हैं वह खातून नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई। आप का मुबारक चेहरा देख कर बोली "आप के होते हुए सारी मुसीबतें हेच हैं"।

(सीरते इब्ने हिशाम: 2/99)

एक मौक़े पर कुरैश के काफिरों ने जैद बिन दुस्ना सहाबी को बन्दी बना लिया था उन लोगों ने उन को क़त्ल करने का निर्णय लिया और उन को क़त्ल करने के लिए बाहर लाए तो अबू सुफियान ने उन से कसम दे कर पूछा, ऐ जैद क्या तुम यह पसन्द करोगे कि तुम आराम से अपने घर में हो और तुम्हारी जगह मुहम्मद क़त्ल हों? जैद ने उत्तर दिया मुझे तो यह भी स्वीकार नहीं कि मुझे इस आपत्ति से छुटकारा दे कर आराम से घर पहुंचा दिया जाए। और इसके बदले में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पांव में केवल एक कांटा चुभो दिया जाए। अबू सुफियान बोले मैं ने किसी को किसी से इतनी महब्बत करते नहीं देखा जितनी महब्बत मुहम्मद के साथी उन से करते हैं।

(सीरते इब्ने हिशाम:2/174)

सहा–बए–किराम रज़ि0 का उल्लेख पवित्र कुर्आन में बड़ी उच्च शैली में किया गया है– अनुवाद: "मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और जो लोग उन के साथ हैं, काफिरों पर सख्त हैं, आपस में रहम दिल (दयालु) हैं, ऐ मुखातब (सम्बोधित) तू उन्हें देखेगा कि रुकुअ और सजदा कर रहे हैं, वह अल्लाह तआला की कृपा और उस की प्रसन्नता चाहते हैं उन का चिन्ह उन के मुखड़ों सजदों के प्रभाव से है उन की यही उपमा तौरेत में है और यही उपमा इंजील में है, जैसे उस खेती के जिस में अपना अंखवा निकाला, फिर उसे दृढ़ किया और वह मोटा हो गया फिर अपने तने पर सीधा खड़ा हो गया और किसानों को खुश करने लगा तो उस की वजह से काफिरों को कष्ट और व्याकुलता पहुंचे उन ईमान वालों और भले काम करने वालों यानी सहाबा से अल्लाह एका वादा किया है"।

(अलफत्ह: 29)

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगत और शिक्षा से जो जमाअ़त (दल) तैयार हुई वह ईमान और अल्लाह के रसूल से महब्बत और उनके लाये हुए दीन के अपनाने में पहाड़ के समान दृढ़ थी। और थोड़े समय में इतनी बड़ी जमाअ़त तैयार हो गई कि मानवीय इतिहास में इस की उपमा नहीं मिलती और यह सब वास्तव में अल्लाह तआ़ला की तरफ से था जिसने यह फैसला किया कि आप के बाद किसी नए नबी के आने की ज़रूरत नहीं और आप की संगत तथा आप से मार्ग दर्शन लेने वाली जमाअत को ऐसे गुड़ों से सुसज्जित कर दिया कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का प्रतिनिधित्व करते हुए उन के दीन को तथा मानव जाति के उच्चारणों को मानव जाति में आगे बढ़ाएं। अल्लाह के नबी के साथियों में हर एक सूर्य तथा चन्द्रमा की भांति प्रकाशवान था अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन भी है "मेरे सहाबा सितारों के समान हैं तुम उन में से जिस के भी पीछे चलोगे सत्य मार्ग पा लोगे"।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जो जितना निकट रहा उसी के अनुकूल उस को प्राथमिकता मिली आप के सब से ज़ियादा निकट हज़रत अबू बक्र रज़ि0 रहे जिन से आप की संगत तथा मित्रता नुबूवत से पहले भी थी वह लग भग आप की आयु के थे केवल ढाई वर्ष छोटे थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहान्त के पश्चात दीने इस्लाम की सुरक्षा और उसके प्रसार का उत्तरदायित्व सब से पहले आप को सौंपा गया और आप पहले खलीफा हुए फिर इसी क्रम से आपके बाद तीन खुलफा हुए जो आप के सच्चे उत्तराधिकारी सिद्ध हुए और खुलफाए–राशिदीन (सत्य मार्ग प्राप्ति प्रतिनिधि) कहलाए खुलफाए राशदीन का यह सिलसिला नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात (देहान्त) के बाद 30 वर्षों तक जारी रहा और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षा तथा प्रशिक्षण के अनुकूल इस्लामिक संविधान के मुताबिक इस्लाम का काम भली भांति जारी रहा खिलाफत काल, भविष्यकाल के लिए एक अनुपम आदर्श बन गया और शुद्ध इस्लाम का मार्ग प्रज्वलित हो गया।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा को जो नैतिक तथा इस्लामिक प्रशिक्षण दिया था उन सहाबा में से आप के सब से अधिक विश्वस्नीय सहाबा के हाथ में इस्लामिक व्यवस्था 30 वर्षों तक रही और जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के काल में इस्लामिक व्यवस्था चल रही थी वैसी ही चलती रही और यह व्यवस्था आगे आने वाले इस्लामिक सरबराहों (शासकों) के लिए आदर्श

बन गई अल्लाह तआ़ला का यह फैसला था कि 10 वर्षों तक उस के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस्लामिक व्यवस्था का आदर्श अपने सहाबा को दिखाएं फिर आप के बाद आप के खुलफाए राशदीन 30 वर्षों तक यह आदर्श दुहराएं इस प्रकार 40 वर्षों में विभिन्न परिस्थितियों में इस्लामिक व्यवस्था चलाने के उदाहरण सामने आ गए ताकि कियामत तक इस्लामिक व्यवस्था चलाने वालों को मार्ग दर्शन मिलता रहे दीन पूर्ण हो चुका है अतः कियामत तक के लिए यह 40 साला आदर्श पर्याप्त हैं। इस्लाम मानवजाति के लिए कियामत तक के लिए संपूर्ण दीन है। अतः यह 40 वर्षीय इस्लामिक व्यवस्था का आदर्श भी पर्याप्त है। अल्लाह का दीन मुकम्मल कर दया गया और उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी अल्लाह ने खुद ली है। फरमाया "(इस्लाम की) यह किताब (कुर्आन) हम ही ने उतारी है और हम ही उसके रक्षक हैं"।

(अल हिज्र:9)

पवित्र कुर्आन में दूसरी जगह आया है– अनुवादः "आज हमने तुम्हारे लिए दीन कामिल (पूर्ण) कर दिया और अपनी नेअ़मतें (कृपाएं) तुम पर मुकम्मल कर दीं और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया।"

(अलमाइदाः 3)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात के बाद उन के जिन खुलफाए राशदीन ने 30 वर्षों तक इस्लामिक व्यवस्था चलाई वह अपनी ज़बान से कोई ऐसी बात नहीं कह सकते थे और अपने अमल से कोई ऐसा काम नहीं कर सकते थे जो अल्लाह और उसके रसूल को अप्रिय हो। सहाबा की संख्या कई हजार है अपितु लाख के ऊपर पहुंचती है।

अल्लाह तआला ने जो अपने प्रिय नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा जो इस्लाम और इस्लाम की किताब कुर्आन और इस्लामी शरीअत मुसलमानों को पहुंचाई वह हम सब मुसलमानों को सहा–बए– किराम द्वारा ही मिली है। सहा–बए–किराम का विश्वास तथा संयम (ईमान व तक्वा) अल्लाह तआला ने बड़ा महान (अजीम) बनाया था, अल्लाह तआला ने उन्हीं को आगे की नस्लों तक इस्लाम को पूरी निष्ठा के साथ पहुंचाने का साधन बनाया। हम को जो शुद्ध दीन मिला और जो सुरक्षित कुर्आन मिला वह सहाबा की सच्चाई, दीनदारी और तक्वे की वजह ही से मिला, सहा–बए–किराम को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो प्रेम, आस्था और सम्बन्ध था सहाबा के इस विशेष सम्बन्ध में हम मुसलमनों के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रेम के साथ सहाबा से प्रेम को भी अनिवार्य कर दिया और सहा–बए–किराम हमारे लिए मार्ग दर्शक तथा अनुकरणीय बने, अल्लाह उन से राजी हुआ और वह अल्लाह से राजी हुए।

ईशभक्ति का अनुपम प्रदर्शन

—डॉ0 मुहम्मद अहमद

इन्सान की ज़िन्दगी में ईशभक्ति को अत्यधिक महत्व प्राप्त है। इसके बिना ज़िन्दगी का कोई मूल्य नहीं है। अतः इसके अभाव में न तो ज़िन्दगी का उद्देश्य ही प्राप्त हो सकता है और न ही इन्सान के अन्दर के गुण पनप सकते हैं, जो वास्तविक ज़िन्दगी में होने चाहिए। कहने का तात्पर्य यह कि मानवीय व नैतिक गुणों और आचरणों का आधार भी ईशभक्ति ही है। वास्तव में ईशभक्ति और दास्यभाव इन्सान की स्वाभाविक चीज़ें हैं। यही वह भाव है जो हमारे मन में तरंगित होने वाले विभिन्न भावों और प्रेरणाओं को अर्थमय एवं आशायुक्त बनाता है। उन्हें अनुकूलता और एकात्मकता प्रदान करता है। भावनाओं और अंत—प्रेरणाओं को अर्थमय एवं आशायुक्त बनाता है। उन्हें अनुकूलता और एकात्मकता प्रदान करता है। भावनाओं और अंत—प्रकरणाओं की अनेकता में एकता की विशेषता पैदा करता है। ईशभक्ति और दास्यभाव के वास्तविक अर्थ और इनकी मांगों को पूर्ण परिचय केवल अल्लाह के रसूलों और पैग़म्बरों द्वारा प्राप्त होता है। ईशभक्ति और दास्यभाव की अनुभूति वह शांति एवं आनन्द निधि है जिससे दिलों को परितोष और दिव्य सुख प्राप्त होता है। यही वह मार्ग है जो बन्दे को उसके पैदा करने वाले की प्रसन्नता और समीप्य प्राप्त कराता है। कुर्आन में है "सजदा करो और क़रीब हो जाओ"

(अल—अलक़: 19)

इस्लाम को अपेक्षित है कि इन्सान अपने पैदा करने वाले ही की भक्ति करे और उसकी ही दास्ता स्वीकार करे। उसके ही हुक्म पर चले और उसी से आशाएं बांधे। उसी के प्रति अपने को समर्पित कर दे और उसके लिए हर प्रकार का त्याग करने और कुर्बानी देने पर तत्पर रहे। हज इन सब भावनाओं का परिपूर्ण और ताज़ा करता है। हज को इस्लाम में मौलिक महत्व प्राप्त है। यह भी मुसलमानों की फ़र्ज़ इबादत है। हर सामर्थ्यवान मुस्लिम स्त्री और पुरुष के लिए पूरे जीवन में कम से कम एक बार हज करना अनिवार्य है।

कुर्आन में है— "लोगों पर अल्लाह का यह हक़ है कि जो व्यक्ति इस घर (काबा) तक पहुंच सकता हो वह इसका हज करे और जिस किसी ने कुफ़्र की नीति अपनायी तो (वह जान ले कि) अल्लाह सारे संसार से बेपरवाह है"।

(आले इमरान:97)।

हज करना वास्तव में अल्लाह की पुकार पर दौड़ना है। अल्लाह के आमंत्रण पर उसकी सेवा में हाज़िरी देना है। अल्लाह ने काबा को सर्वथा भलाई, बरकत और सारे संसार के लिए मार्ग दर्शन का उद्गम बनाया है। यह एकेश्वरवाद (तौहीद) का केन्द्र है। हज से संबंधित जितने कार्य हैं उन सबसे इन्सान के दिल पर एकेश्वरवाद ही की छाप पड़ती है। हज एक पहलू से सबसे बड़ी इबादत है। अल्लाह के प्रेम और उसकी भक्ति में इन्सान अपना कारोबार और घर—परिवार एवं मित्रों को छोड़ कर यात्रा पर निकलता है। फिर उसकी यह यात्रा साधारण यात्रा की तरह नहीं होती। इस यात्रा में उसका लौ अल्लाह ही की ओर लगा रहता है।

शेष पृष्ठ....28 पर

प्रार्थना

—इदारा

हे विधाता जग के स्वामी ज्ञान हम को दीजिए
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हम से कीजिए
लीजिए हम को शरण में हम सदा चारी बनें
सत्य वादी धर्म रक्षक वीर ब्रत धारी बनें
निर्धनों विधवाओं की निष्काम हम सेवा करें
और अनाथों बे सहारों की भी हम सेवा करें
अन पढ़ों को ज्ञान दे कर उन की हम सेवा करें
बूढ़ों को सम्मान दे कर उन की हम सेवा करें
अपने सद्व्यवहार से माँ-बाप को सुख चैन दें
दादा दादी नाना नानी को भी हम सुख चैन दें
मालिक हमें सामर्थ्य दे हम देश के सेवक रहें
तेरे ही सहयोग से हम देश के रक्षक रहें
देश पर जब आंच आने की ख़बर सुन पाएं हम
देश की रक्षा की ख़ातिर आगे बढ़ कर आएं हम

इहराम की हालत में जो चीजें मना हैं

—हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी

1. औरत से हम—बिस्तरी और वह बातें जिन से हमबिस्तरी की ख़्वाहिश पैदा हो।

2. अपना या किसी का सर या दाढ़ी मूण्डना या तराशना और बदन के किसी हिस्से का बाल दूर करना ख्वाह मून्ड कर या किसी और तरीक़े से।

3. नाखुन तराशना या तरशवाना।

4. सिला हुआ कपड़ा पहनना।

5. मोजे या पैताबे पहनना।

6. खुशबू मलना या खुशबूदार चीज़ में रंगा हुआ कपड़ा पहनना।

7. सर या मुंह या उनके किसी हिस्से को या नाक को कपड़े से ढ़ाँकना।

8. खुश्की के जानवर का शिकार करना या पकड़ना या शिकार में मदद देना वगैरह।

9. जुएं मारना या कपड़े से निकाल कर फेंकना या दूसरे को देना या जिस कपड़े में जुएं पड़ी हों उस को धूप में डालना कि जुएं मर जाएं।

10. सर या बदन में जैतून या तिल का तेल इस्तिमाल करना।

11. हर गुनाह के काम से बचना।

औरतें सिले कपड़े पहनेंगी, सर ढ़केंगी, चेहरा खुला रखेंगी, पंखे आदि से चेहरा छुपा सकती हैं मगर पंखा चेहरे से अलग रहे।

एहराम की हालत में जो चीज़ें मना नहीं हैं:-

1. एहराम की हालत में घरेलू जानवरों का ज़ब्ह, करना जैसे बकरी या मुर्गी का ज़ब्ह करना मना नहीं है।

2. हिन्दोस्तान में जो जूते आम तौर पर पहने जाते हैं अगर उन से पैर की उभरी हुई हड्डी नहीं छुपती तो उन का पहनना एहराम में जाइज है। अच्छा यह है कि एहराम की हालत में हवाई चप्पलें पहनी जाएं।

3. ऐसा खाना जिसमें खुश्बू डाल कर पकाया गया हो उस का खाना जाइज है।

ज़मज़म के पानी की फ़ज़ीलत:-

हज़रत जाबिर रज़ि0 ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अनुवाद :— "ज़मज़म से वह मिलता है जिस के लिए वह पिया जाता है"।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अनुवाद:— "ज़मीन पर सब से अच्छा पानी ज़मज़म का पानी है"।

कीमियाई तहकीकात में और तिब्बी मुताले से मालूम हुआ है कि ज़मज़म का पानी उन अजजा पर मुश्तमल है जिन से जिगर, मेदा, आँतों और गुर्दों को लाभ पहुंचता है कम पीने से भी फाइदा होता है और ज़ियादा पीना मुफीद है और इस में कोई ज़रर नहीं।

(हज़ व मुकामाते हज से ग्रहीत)

❖❖❖

बातें नैतिकता की

(मैथिली शरण गुप्त की कविता से)—प्रस्तुतिः हुसैन अहमद

यही पशु प्रवृत्ति है कि आप—आप ही चरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे

पशुओं का यह प्राकृतिक स्वभाव है कि वह चर भूमि में जब चरने जाते हैं तो उन को दूसरे पशुओं की चिन्ता नहीं होती वह अपना पेट भरने के लिए स्वयं चर कर अपना पेट भरते हैं यदि यही प्रवृत्ति मनुष्य में पाई जाए तो वह मनुष्य पशु समान है। मनुष्य तो वह है जो अपने भाई मनुष्य के हित के लिए अपने प्राण निछावर कर दे। एक मुसलमान को इस्लाम भी यही शिक्षा देता है।

अहा! वही उदार है परोपकार जो करे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे

खुले मन का उदार चरित्र वाला वही मनुष्य है जो दूसरों का भला चाहता हो इस लिए वास्तव में मानव वादी मनुष्य वही है जो दूसरे मनुष्यों की भलाई के लिए अपने प्राण अर्पित कर दे, एक मोमिन ऐसे ही गुणों से सुसज्जित होता है।

अनर्थ है बन्धु ही न बन्धु की व्यथा हरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे

सारे मनुष्य परस्पर भाई—भाई हैं परन्तु यह कितनी अनर्थ तथा व्यर्थ की बात होगी कि एक मनुष्य अपने भाई मनुष्य का दुख दूर करने का प्रयास न करे, एक मनुष्य का यह स्वभाव होना चाहिए कि वह जब अपने मनुष्य भाई की व्यथा देखे उसको दुख में देखे तो व्याकुल हो जाए और उस का दुख दूर करने में लग जाए। वास्तव में मनुष्य तो वही है जो अपने भाई मनुष्य के हित के लिए जीवित रहता है, एक मुसलमान को भी ऐसा ही होना चाहिए।

"रहिमन" वे नर मर चुके, जे कहुं मांगन जाहिं
उन ते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं

रहीम कवि कहते हैं कि मनुष्य को आत्म निर्भर होना चाहिए, अपने परिश्रम से स्वावलंबी होना चाहिए किसी के सामने हाथ न फैलाना चाहिए परन्तु यदि उस ने विवश हो कर किसी के सामने हाथ फैला दिया तो वह इतना गिर गया जैसे उस ने मृत्यु प्राप्त कर लिया लेकिन जिसके सामने हाथ फैलाया उस को चाहिए कि अपनी शक्ति के अनुसार उस की सहायता करे यदि उस ने सामर्थ्य रखते हुए "न" कह दिया तो वह हाथ फैलाने वाले से भी अधिक नीच हो गया अर्थात उस की मनुष्यता ने मृत्यु प्राप्त कर ली।

"रहिमन" विपदाहू भली, जो थोरे दिन होय
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय

रहीम कहते हैं कि विपत्ति से मनुष्य को कष्ट होता है, दुख होता है मनुष्य विपत्ति से

बचाव के लिए अपने विधाता से शरण मांगता है परन्तु यदि थोड़े दिनों की विपदा मनुष्य पर आ जाए तो वह उस के लिए इसलिए भली है कि उस को उस विपदा से अपने पराये का ज्ञान हो जाता है। जो अपना है वह उस विपदा में उस की सहायता के लिए आ खड़ा होता है।

"रहिमन" रिस को छाँड़ि के, करो गरीबा भेस
मीठौ बोलौ नै चलौ, सबै तुम्हारे देस

रहीम कहते हैं क्रोध छोड़ो किसी को किसी की भली दशा देख कर उस से ईर्ष्या मत करो, साधारण लोगों की भांति जीवन बिताओ हर एक से मीठी बोली में बात करो अपने जीवन में घमण्ड मत लाओ नम्रता का जीवन बिताओ तो लोकप्रिय हो जाओगे समाज के सभी लोग तुम्हारा सम्मान करने लगेंगे हम को चाहिए कि हम समाज में ऐसी नैतिक बातों को रवाज देने का प्रयास करें।

जो तोको कांटा बुवै, ताहि बोइ तू फूल
तो को फूल के फूल हैं, वाको है त्रिशूल

कबीर कहते हैं कि जो तेरे मार्ग में कांटा डाले उस के मार्ग में तू फूल बिछा दे तुझ को फूल बिछाने का प्रतिफल मिलेगा और उस को कांटा बिछाने का, कबीर जी के कहने का तात्पर्य यह है कि जो तेरे साथ बुराई करे तू उस के साथ भलाई कर, तुझ को भलाई का बदला मिलेगा और उस को बुराई का, यही शिक्षा इस्लाम भी देता है और आगे बढ़ कर बताता है कि अगर बुराई करने वाले के साथ भलाई करोगे तो वह मुम्हारे साथ बुराई करना छोड़ कर तुम्हारा घनिष्ट मित्र बन जाएगा।

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी आय
बिना जीव की सांस से, लोह भस्म होई जाय

कबीर कहते हैं कि दुर्बल पर अत्याचार मत करो इसलिए कि जब वह पीड़ित हो कर हाय कहता है तो उस की हाय बड़ी मोटी होती है अर्थात बड़ी प्रभावकारी होती है। वह समझाने के लिए कहते हैं कि देखो चमड़े की धौंकनी से जो बिना जीव होती है उस की वायु से लोहा गल जाता है तो जीवधारी उत्पीड़ित की प्रभावकारी हाय से उस को सताने वाला अवश्य विनाश को प्राप्त हो जायेगा।

इस्लाम में भी बताया गया है कि उत्पीड़ित जब अत्याचारी को श्राप देता है तो अल्लाह उस को स्वीकार कर लेता है और अत्याचारी दण्डित हो के रहता है।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय
औरन को शीतल करे, आपो शीतल होय

कबीर कहते हैं कि किसी से बात करते समय अपने मन का अहंकार निकाल कर नम्रता पूर्वक मीठी बोली में बात करें, इससे अपने मन को भी शांति मिलेगी और सुनने वाला भी आनन्दित होगा। लोक प्रियता प्राप्त करने और समाज को शांतिमय बनाने के लिए यह सीख बड़ी ही लाभदायक है।

हज की फ़रज़ीयत व अहम्मीयत

—मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

हज इस्लाम के पाँच अरकान में से एक रुक्न है जिस तरह नमाज़, रोज़े ज़कात फर्ज़ हैं उसी तरह हज भी फर्ज है। इस की फरज़ीयत कुर्आने शरीफ और हदीसे शरीफ, इजमअ़ और अ़क्ल हर तरह से साबित है, हज की फरज़ीयत का इन्कार कुफ्र है हर उस शख्स पर जो आज़ाद, आ़क़िल, बालिग़ और तन्दुरुस्त हो और उस के पास अपनी और अपने बीवी बच्चों की बुन्यादी जरूरियात को पूरा करने के बाद इतना ज़ाइद हो कि उस से मक्का मुकर्रमा जाने आने और दौराने सफर के इखराजात पूरे हों सके। उम्र में एक बार फर्ज होता है, जिस की अदायगी जिन्दगी भर में ज़रूरी होती है। हज की इस्तिताअ़त के होने की सूरत में भी हज न करना अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ से बहुत बुरा करार दिया गया है और उस पर बड़ी वईद आई है। अल्लाह तआला फरमाता है अनुवादः "और अल्लाह का हक़ है लोगों पर, हज करना उस घर का जो कोई पावे उस तक राह और जिस ने कुफ्र व इन्कार किया तो अल्लाह ग़नी व मुस्तग़नी है तमाम जहां के लोगों से"। (आले इमरानः 97)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि "जो शख्स हज का इरादा रखता हो उस को जल्दी करना चाहिए" और फरमाया "जिस शख्स को किसी हाजत, या मरज़े शदीद या जालिम बादशाह ने हज से नहीं रोका और वह हज किए बिना मर गया तो उसकी मरज़ी जो चाहे करे यहूदी हो कर मरे या नसरानी हो कर"।

कुर्आने मजीद की आले इमरान वाली आयत से ज़ाहिर होता है कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक हज़ का न करना कुफ्र की तरह की बात है और हदीस शरीफ से खुला हुआ इशारा मिल रहा है कि हज का न करना गोया इस्लाम से रिश्ता नाता तोड़ देना या इस्लाम से बे तअ़ल्लुक़ी के मुरादिफ है। अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल के इन फरमूदात के बाद किसी मुसलमान के लिए हज तर्क करने या उस की अदायगी में सुस्ती व कोताही करने की क्या गुंजाइश रह जाती है। लिहाजा हज की इस्तिताअत होते ही किसी भी मुसलमान के लिए ज़ेबा नहीं कि उस की अदायगी में ताखीर करे। (हज व मुकामाते हज से ग्रहीत) ◆◇◆

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: अगर उमरे पर जाने वाली औरत को एहराम की नीयत से पहले हैज़ आ जाय तो वह क्या करे?

उत्तर: अगर उमरे के एहराम की नीयत से पहले औरत को हैज आ जाए तो वह नहा धो कर या कम से कम वुज़ू कर के नीयत करे कि "ऐ अल्लाह मैं उमरे की नीयत करती हूं मेरे लिए उमरा करना आसान कर दे" और फिर ज़बान से आहिस्ता आवाज़ में लब्बैक पढ़े और चेहरा खोल दे, याद रहे कि महरम के बिना किसी औरत के लिए सफ़र करना हराम है, सिवाए साठ से ऊपर की बूढ़ी औरत के वह औरतों के साथ महरम के बगैर हज कर सकती है यह भी याद रहे कि एहराम की नीयत किये बिना मीक़ात से आगे न बढ़ें। अब वह बराबर तल्बिया पढ़ती रहे, दुरूद पढ़े दुआएं पढ़े नमाज़ तो पढ़ नहीं सकती इसी तरह वह हरम की मस्जिद में बल्कि किसी भी मस्जिद में दाख़िल नहीं हो सकती, मक्का मुकर्रमा पहुंच कर इन्तिज़ार करे जब हैज रुक जाये तो नहा धो कर बा वुज़ू हरम में दाखिल हो याद रहे कि वह एहराम में है, अब वह काबे का तवाफ़ करे, सफा मरवा के बीच सई करे और चोटी से एक अंगुल बाल काट कर एहराम से बाहर आ जाए, उमरा पूरा हो गया अल्लाह क़बूल करे।

प्रश्न: अगर किसी औरत को 8 जिल्हिज्ज के एहराम की नीयत से पहले हैज़ आ जाए तो वह क्या करे?

उत्तर: 8 जिल्हिज्ज को एहराम की नीयत से पहले अगर किसी औरत को हैज़ आ जाए तो वह गुस्ल करे या कम से कम वुज़ू करे इस से पाक न होगी लेकिन एहराम की नीयत से पहले ऐसा करना बेहतर है, अगर न करे तो भी कोई गुनाह न होगा, अब वह हज की नीयत करे, "ऐ अल्लाह में हज की नीयत करती हूं मेरे लिए हज करना आसान कर दे" फिर ज़बान से आहिस्ता आवाज़ में लब्बैक पढ़े, अब वह हज के एहराम में है, एहराम की तमाम पाबन्दिया उस पर हैं। अब खूब लब्बैक पढ़ती रहे दुरूद शरीफ पढ़े खूब दुआएं मांगे और अपने महरम के साथ मिना जाये। अरफात जा कर वुकूफ़ करे, मुजदल्फ़ा आ कर रात गुज़ारे यहां वुकूफ़ करे 10 जिल्हिज्ज को जमरात जा कर बड़े शैतान की रमी करे, कुर्बानी का नज़्म करे, फिर एक अंगुल बाल चोटी से काट कर एहराम से बाहर आ जाये। बीच में अगर हैज रुक जाए तो नहा धो कर नमाज़ शुरुअ़ कर दे और हज के जो काम रह गये हों उन को करती रहे। अगर 10 जिल्हिज्ज को पाक हो गई हो तो हरम जा कर तवाफ़े ज़ियारत करे और हज की सई करे, अगर 10 जिल्हिज्ज तक पाक न हो तो तवाफे ज़ियारत रोके रखे मगर 11,12 की रमी करे और पाक होने पर नहा धो कर बावुज़ू हरम में दाखिल हो कर तवाफ़े ज़ियारत करे और हज की सई करे, अब उस का हज पूरा हो गया। जिस औरत को हज के

एहराम की नीयत के बाद हैज़ आ जाए वह भी इसी तरह अपना हज पूरा करे, अल्लाह क़बूल करे, लेकिन वतन वापसी से पहले तवाफ़े वदाअ़ करे कि यह वाजिब है और अपने महरम के साथ अपने वतन जाये।

प्रश्न: मसअ़ला यह है कि औरत एहराम की हालत में अपने चेहरे पर कोई कपड़ा न डाले अगर कोई अजनबी मर्द सामने आ जाए तो पंखे वगैरह से अपना चेहरा छुपा लें, सवाल यह है कि अगर कोई औरत एहराम की हालत में अजनबी मर्दों से अपना चेहरा न छुपाए तो क्या गुनहगार होगी?

उत्तर: जो औरत एहराम में हो उस को चाहिए कि अजनबी मर्दों से अपना चेहरा वगैरह पंखे से छुपाए मगर पंखा चेहरे से लगे नहीं, इस से फित्ने से बचत है और उसके लिए सवाब है लेकिन अगर कोई औरत एहराम की हालत में अजनबी मर्दों से अपना चेहरा न छुपा सके या न छुपाये तो इन्शाअल्लाह गुनहगार न होगी, अलबत्ता उसको अपनी निगाहें नीची रखना चाहिए, मर्दों को भी चाहिए कि अजनबी औरतों के चेहरों पर नज़र न डालें अगर नज़र पड़ जाए तो तुरन्त हटा लें, अगर मर्द ऐसा न करेंगे तो गुनहगार होंगे। ऐसा करना मर्दों के लिए हर हाल में ज़रूरी है चाहे वह एहराम में हों या आम हालत में।

प्रश्न: औरत एहराम से बाहर आने के लिए क्या अपनी चोटी के बाल खुद काट सकती है या दूसरे से कटवाना ज़रूरी है?

उत्तर: उमरे की सई के बाद या 10 जिल्हिज्ज को हज की कुर्बानी के बाद एहराम से बाहर आने के लिए अपनी चोटी के बाल खुद काट सकती है, ज़रूरी नहीं कि दूसरा काटे लेकिन अगर दूसरे से कटवाये तो वह काटने वाली औरत हो या अपना शौहर या अपना महरम मर्द लेकिन अच्छा है कि खुद काट ले।

प्रश्न: तवाफ की भीड़ में औरत का जिस्म ग़ैर मर्दों से मस होता है इस में कोई गुनाह तो नहीं होता?

उत्तर: औरतों के लिए तवाफ़ का अलग से इन्तिज़ाम न मुम्किन है इस लिए तवाफ़ की भीड़ में अगर औरत के (कपड़े पहने) जिस्म से अजनबी मर्द का जिस्म मस होगा तो इनशाअल्लाह कोई गुनाह न होगा।

प्रश्न: क्या हज करने वाले हाजी पर हज की भी कुर्बानी करना होगी और साहिबे निसाब वाली कुर्बानी भी करना होगी?

उत्तर: हज्जे किरान या तमत्तु हज करने वाले पर हज की कुर्बानी वाजिब होगी जो 10 जिल्हिज्ज को सिर्फ हरम के हुदूद में की जाती है लेकिन यह हाजी अगर अपने पैसों से हज करने गया है और साहिबे निसाब है और 8 जिल्हिज्ज को मक्का मुकर्रमा में मुकीम के हुक्म में है यानी मक्का मुकर्रमा में कियाम करते हुए 8 जिल्हिज्ज को 15 दिन हो चुके हैं तो अगरचि 10 जिल्हिज्ज को वह मिना में होगा उस पर साहिबे निसाब वाली कुर्बानी भी वाजिब होगी जिसे वह 10 जिल्हिज्ज को ईदुल अजहा की नमाज़के बाद से 12 जिल्हिज्ज को गुरूबे आफताब से पहले तक किसी भी दिन और कहीं भी करवा सकता है जहां कुर्बानी होगी वहीं की तारीख का लिहाज होगा, लेकिन अगर हाजी 8 जिल्हिज्ज को मक्का मुकर्रमा में मुसाफिर के हुक्म में है

यानी 8 जिल्हिज्ज तक मक्का मुकर्रमा में ठहरे हुए उस को 15 दिन नहीं हुए हैं तो 10 जिल्हिज्ज को वह मिना में मुसाफिर है और साहिबे निसाब वाली कुर्बानी उस पर वाजिब नहीं।

प्रश्न: जो लोग मुल्क से बाहर दूसरे मुल्कों में नौकरी करते हैं वह साहिबे निसाब हैं अगर वह कुर्बानी के दिनों में बाहर मुल्कों में मुकीम हों और वहां अपनी वाजिब कुर्बानी न करना चाहें बल्कि अपने वतन में अपने अजीजों से कुर्बानी करवाना चाहें तो वह क्या करें?

उत्तर: जो मुसलमान कुर्बानी के दिनों में बाहर मुल्कों में मुकीम हों यानी मुसाफिर न हों और साहिबे निसाब हों और अपनी वाजिब कुर्बानी अपने वतन में अपने अज़ीज़ों से करवाना चाहें तो वह फोन से या खत से या किसी भी जरिए से जिस अज़ीज से कुर्बानी करवाना चाहें उस को कहला दें कि मेरी तरफ से कुर्बानी कर दे यह पैग़ाम कुर्बानी करने से पहले पहुंचना चाहिए या उसके घर वाले या उसका कोई अज़ीज़ जो उस की तरफ से कुर्बानी करना चाहे वह उस के इल्म में लाए कि मैं तुम्हारी तरफ से कुर्बानी करूंगा उसके बाद कुर्बानी की जाए तो उस का वाजिब अदा हो जाएगा। याद रहे जो शख्स कुर्बानी के दिनों में मुल्क से बाहर हो उस के घर वाले या उस का कोई अज़ीज़ उस के कहे बगैर या उसके इल्म में लाए बगैर उस की तरफ से कुर्बानी कर देगा तो कुर्बानी न होगी। और वाजिब कुर्बानी अदा न होगी, वाजिब कुर्बानी उस के जिम्मा रहेगी।

प्रश्न: क्या मुसाफिर पर कुर्बानी वाजिब नहीं होती जब की वह मालदार हो?

उत्तर: हाँ मुसाफिर पर कुर्बानी वाजिब नहीं है जब की वह कुर्बानी के दिनों में सफर पर हो चाहे साहिबे निसाब हो लेकिन सफर की हालत में अगर कहीं 15 दिन ठहरने का इरादा कर लिया और उन 15 दिनों में कुर्बानी का भी कोई दिन आ गया और वह साहिबे निसाब है तो उस पर कुर्बानी वाजिब हो जाएगी।

प्रश्न: मुसाफिर किसे कहते हैं और कितना फासिला तै करने पर आदमी मुसाफिर होता है?

उत्तर: मुसाफिर उसे कहते हैं जो तीन मन्जिलों के सफर की दूरी का सफर करे, सुब्ह से ठीक दोपहर तक अवसत चाल से पैदल चलने के फासिले को एक मन्जिल कहते हैं, अच्छा खराब रास्ता या जाड़े या गर्मी के दिनों के लिहाज से यह फासिला कम जियादा हो कता है। इसीलिए इस फासिले के बयान में उलमा में इख्तिलाफ हुआ है किसी ने 36 मील, किसी ने 42 मील, किसी ने 48 मील, तो किसी ने 54 मील लिखा है, ज़ियादा तर हनफी उलमा ने 48 मील लिखा है जिसकी बराबरी किलो मीटर में 77 किलो मीटर 247 मीटर है जिन लोगों ने 48 मील शरई माना है उन के लिहाज से 87 किलो मीटर से जियादा फासिला बनता है मगर 88 किलो मीटर से कम, आम तौर से लोग 48 मील अंग्रेज़ी (77 किलो मीटर 247 मीटर) फासिले ही को सफर का शरई फासिला मानते हैं।

प्रश्न: मुसाफिर सफर के दौरान मुकीम कब कहलाता है?

उत्तर: मुसाफिर सफर के दौरान अगर कहीं 15 दिन या उससे ज़ियादा ठहरने का इरादा कर ले तो वह मुकीम

के हुक्म में हो जाता है।

प्रश्न: मुसाफिर किन नमाज़ों में क़स्र (कमी) करेगा?

उत्तर: मुसाफिर जुह्र, अस्र और इशा के फर्ज़ों में 4 के बजाए दो दो फर्ज पढ़ेगा फज्र में और मगरिब में कस्र नहीं है। अगर कोई मुसाफिर जुह्र, अस्र या इशा के फर्ज पूरे पढ़ लेगा तो हनफी उलमा के नजदीक उस को कस्र के साथ नमाज़ दुहराना होगी, सुन्नत नमाज़ों में या नफ्ल नमाज़ों में मुसाफिर को इख्तियार है, पढ़े या छोड़ दे, लेकिन बेहतर यही है कि आसानी से पढ़ सके तो पढ़ ले मगर सुन्नतों में कस्र (कमी करना) नहीं है।

प्रश्न: कुछ लोग हज के मुसाफिर को रुख्सत करते वक्त फूल की माला (सहरा) उसके गले में डालते हैं और कुछ लोग एक पट्टी में रूपया बांध कर उसके बाजू पर बांधते हैं और उस को इमाम जामिन कहते हैं इसका क्या हुक्म है?

उत्तर: लोग खुशी में और जजबात में आ कर ऐसा करते हैं हज के मुसाफिर को चाहिए कि वह हिकमत से ऐसे लोगों से कहे कि भाईयो आप लोगों की महब्बत का शुक्रिया, मैं अल्लाह की तौफीक़ से बड़ी अहम इबादत हज के लिए जा रहा हूं उस की कबूलीयत के लिए जरूरी है कि मैं उस सफर में और सफर से पहले कोई गलत काम न करूँ फूल की माला पहनना मर्दों के लिए ठीक नहीं है इस लिए इस माला पहनाने से मुझ को मुआफ कर दें। इसी तरह मुसाफिर के बाजू पर इमाम जामिन बांधना दुरुस्त नहीं, मेरा जामिन तो अल्लाह है। आप लोग तो मेरे लिए दुआ करें कि मेरा सफर आसान हो, अल्लाह मेरी हिफाजत करे और मेरे लिए हज करना आसान करे और कबूल करे, इस तरह की बातें करके हज का मुसाफिर इन गलत रस्मों से बच सकता है। औरत भी जो हज का सफर कर रही हो वह भी ऐसी बातों से अपने को गलत रस्मों से बचा सकती है अलबत्ता उस के लिए एक दो फूल की माला पहनाने की गुंजाइश है लेकिन जिस हज के मुसाफिर में इस तरह समझाने की सलाहियत न हो वह इस को कराहत के साथ बरदाशत करे अल्लाह उस को मुआफ करेगा।

◆◆

ईश शक्ति का अनुपम.....

जैसे–जैसे अल्लाह का घर करीब आता जाता है उत्सुकता और प्रेम की अग्नि और भड़कती जाती है। वह अपने गुनाहों पर लज्जित होता है। सच्चे दिल से तौबा करता और अल्लाह से प्रार्थनाएं करता है कि उसे अच्छे कर्म करने का सौभाग्य प्राप्त हो। वास्तव में हज इन्सानी ज़िन्दगी के सुधार का भी हर वर्ष होने वाला विश्व स्तरीय आयोजन है। यह इस्लाम के समानता के सिद्धान्त का विश्व स्तर पर व्यावहारिक प्रदर्शन भी है और विश्व बंधुत्व एवं भ्रातृत्व का भी। इस मौक़े पर अल्लाह के मार्ग में जानवर कुरबान करना अपने–आपको कुरबान करने के प्रतिनिधित्व का अर्थ रखता है। यह वास्तव में इस बात का इक़रार है कि हमारे प्राण अल्लाह की नज्र (भेंट) हैं। जब वह मांगेगा हम दे देंगे। जब भी अल्लाह के मार्ग में ख़ून बहाने की आवश्यकता होगी, अपना ख़ून बहाएंगे। कुरबानी के पीछे यही पवित्र भावना काम करती है। अल्लाह से दुआ है कि हम सब को अपने हुक्मों पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

(मासिक कान्ति सितम्बर 2016 से ग्रहीत)

❖❖❖

धन का शुद्ध प्रयोग कीजिए

—मौलाना सय्यिद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

पवित्र कुर्आन में है कि कियामत में किसी बन्दे के कदम उस वक्त तक अपनी जगह से हट न सकेंगे जब तक उससे चार बातों का जवाब न ले लिया जाए उन चारों बातों में से एक बात यह है कि "माल (धन) कहां से कमाया और कहां खर्च किया" माल अल्लाह की एक महान देन और महान पुरस्कार है, जिस से सांसारिक तथा पारलौकिक (आखिरत से संबन्धित) के अनगिनत काम होते हैं। अतः माल मिलने पर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए और उस का शुक्र यह है कि माल को शुद्ध कामों में खर्च किया जाए और माल को वैध विधि से प्राप्त किया जाए, यही इस नेमत (वरदान) का शुद्ध आदर्श सम्मान तथा कृतज्ञता (शुक्र गुजारी) है धन को अवैध विधि से कमाना तथा उस को गलत जगह खर्च करना दोनों में अल्लाह की ना शुक्री (अवज्ञा) करना है जो लोग अवैध मार्ग से धन प्राप्त करते हैं और हराम विधि से रूपया कमाते हैं वह अल्लाह के नाशुक्र गुजार (कृतघ्न) तथा अल्लाह के नाफरमान (अवज्ञाकारी) बन्दे होते हैं और फिर अवैध मार्ग की कमाई से प्राप्त किये हुए माल का परिणाम भी खराब होता है। बल्कि हराम माल प्रायः आपत्ति का कारण बन जाता है। अतः मुसलमान मर्द तथा औरतें माल कमाते वक्त इस का ध्यान रखें कि माल वैध कमाई अथवा वैध मार्ग से आ रहा है या नहीं और खर्च करते समय भी ध्यान रखें कि माल वैध मार्ग में खर्च हो।

सब जानते हैं कि माल कमाने का नाजाइज तरीका (अवैध विधि) क्या है सब जानते हैं कि चोरी का माल, ग़सब (अपहरण) का माल, घूस का माल, ब्याजु माल, झूठ बोल कर या मिलावट कर के कमाया हुआ माल या नाप तौल में कमी कर के कमाया हुआ माल, ज़कात के हकदारों का माल, वाजिब सद्क़ा जैसे फित्रे का माल कुर्बानी की खाल की कीमत का पैसा हकदार न होते हुए ले कर अपने काम में लाना जाली (छली), पीर फ़क़ीर बन कर साधारण लोगों से माल प्राप्त करना, झूठी गवाही दे कर माल प्राप्त करना, धोखा दे कर किसी के माल पर अधिकार जमा लेना आदि। यह सब अवैध मार्ग से कमाए हुए माल हैं, जो हराम हैं ऐसे माल एवं ऐसी तिजारत में ऐसी जाइदाद में न कोई बरकत (शुद्ध लाभ) होती है न ऐसे हराम माल इस्तेमाल करने पर अल्लाह की रहमत (दया) उतरती है यह हराम माल एक छांव की भांति है, अभी आया, अभी गया, इस संसार में चाहे यह थोड़ा साथ दे दे

शेष पृष्ठ....36 पर

भारत प्यारा ज़िन्दाबाद

—इदारा

भारत देश स्वतंत्र है – राज यहां गणतंत्र है
हम क्या जानें गुलामी क्या है – पराधीनता में खामी क्या है
स्वाधीनता में आंखे खोली – स्वतंत्र हुए तुम अम्मा बोलीं
करो स्वतंत्रता का सम्मान – स्वाधीनता का जानो मान
मास अगस्त की १५ आई – आज़ादी की खुशयां लाई
राष्ट्र ध्वज फहराएं गे – भारत के गुण गायें गे
जनसंख्या में सब से आगे – सवा अरब सुन दुशमन भागे
खेती से हम अनाज हैं लाते – भर भर पेट सभी हैं खाते
मधु मक्खी से शहद बनाते – दूध दही की नदी बहाते
मछली पालें मछली खाएं – कुक्कुट पालें अण्डे खाएं
भांति भांति की सब्ज़ी उगाएं – फलों के हम बाज़ार लगाएं
भांति भांति के तंत्र बनाएं – एक हैं हम सब मंत्र यह गाएं
बाइक मोटर रेल बनाएं – वायुयान में बैठ उड़ाएं
हर छेत्र याँ करे विकास – दादी की न टूटे आस
घर घर होगा शौचालय – गांव गांव में विद्यालय
खुले में शौच करे ना कोई – अन पढ़ यहां रहे ना कोई
सड़कें यां सब पक्की होंगी – अच्छी से भी अच्छी होंगी
स्वप्न नहीं यह प्रण है अपना – पूरा होगा बड़ों का सपना
भारत प्यारा देख हमारा – देश हमारा मन से प्यारा
लोक तंत्र का राज यहां है – धर्म निर्पक्ष का राज यहां है
हर धर्मी आज़द यहां है – भाई चारा वाद यहां है
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद – हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद

पवित्र कुर्आन की मौलिक शिक्षाएं

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

संसार में जितने धर्म हैं उन में से कुछ तो वह हैं जिन को मनुष्यों ने अपनी इच्छानुसार तथा अपनी पसन्द के अनुकूल बना लिया हैं वह उन के स्वरचित धर्म हैं (यद्यपि उन का दावा है कि हमारा धर्म भी आकाशीय है)। दूसरे वह धर्म हैं जिन को जग के स्वामी ने अपने प्रिय संन्देष्टाओं (रसूलों) द्वारा, मानव जाति के लिए नियुक्त किए हैं और वह आकाशीय धर्म कहलाते हैं पवित्र कुर्आन में उन आकाशीय धर्मों के मूलतत्व तथा उनकी शुद्ध दशा के सम्मान का आदेश दिया है हम उन के नामों का सम्मान करते हैं चाहे वह अपने आंतरिक में अपने वास्तविक रूप में न हों। जो धर्म मानव रचित हैं वह सत्यमार्ग से बहुत दूर हैं। आकाशीय धर्मों को छोड़ कर कुर्आन में शिर्क (अल्लाह के साथ साझी ठहराना) और कुफ्र (अल्लाह की बातों को न मानना) बताया है।

आकाशीय धर्म जो अल्लाह के नबियों द्वारा भेजे गए उन सभी धर्मों में भले कर्म, उपासनाओं, आदेशों तथा धर्म विधान से पहले विश्वास को शुद्ध कराया गया और अपने समय के हर नबी ने अपने काल में सब से पहले जग के स्वामी अल्लाह (ईश्वर) के एक ही पालनहार, निर्माता तथा स्वामी होने की शिक्षा दी उसी एक की उपासना और उस की कृतज्ञता के प्रकटीकरण की विधियां सिखाई और इन शिक्षाओं को मनुष्यों की रचना का कारण बताया, समस्त नबियों (दूतों) के आवहन तथा उनके प्रयासों का केन्द्रीय बिन्दु यही रहा है कि मनुष्य केवल एक अल्लाह का पुजारी तथा आज्ञाकारी रहे।

उन आकाशीय धर्मों के नबियों पर अल्लाह तआला ने किताबें उतारीं जिन में तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा भले कर्मों का उपदेश दिया गया तत्पश्चात उनके मानने वालों ने समय बीतने के साथ उन आकाशीय पुस्तकों में अपनी इच्छा के अनुसार फेर बदल कर डाला तथा अपने मन की इच्छा के अनुकूल उन की शिक्षाओं को बदल कर उन पर चलने लगे जिस की पुष्टि अल्लाह तआला ने अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उन पर उतारी गई अन्तिम आकाशीय पुस्तक "पवित्र कुर्आन" द्वारा की गई तथा अपनी अन्तिम पुस्तक "पवित्र कुर्आन" की सुरक्षा का स्वयं वचन दिया।

इस अन्तिम दीन इस्लाम में वह बातें और वह आदेश नहीं लाए गए जो पहले की विभिन्न क़ौमों के लिए खास थे तथा जो आदेश और शिक्षाएं उन कौमों के लिए जरूरी नहीं थीं और उन के लिए बयान नहीं की गई थीं

वह इस अन्तिम उम्मत पर पूरी की गई और इस प्रकार अल्लाह तआला ने अपने दीन के आदेशों को मुकम्मल (पूर्ण) कर दिया। इस प्रकार इस्लाम को अन्तिम नबी तथा अन्तिम पुस्तक (पवित्र कुर्आन) द्वारा सम्पूर्ण तथा कियामत तक रहने वाला दीने हक (सत्य धर्म) घोषित कर दिया। पवित्र कुर्आन जो पिछली समस्त आकाशीय पुस्तकों तथा ग्रन्थों का नियन्त्रक एवं संरक्षक है और अल्लाह की अन्तिम तथा स्थायी पुस्तक है। इस विषय को पवित्र कुर्आन में बार–बार विभिन्न शैलियों तथा विधियों द्वारा वर्णित किया गया है अपितु इस पवित्र कुर्आन का यही चमत्कारी विषय है कि पवित्र कुर्आन अल्लाह की अन्तिम पुस्तक है और इस के आदेश तथा निर्देश मानव जाति के लिए क़ियामत तक के लिए हैं।

एकेश्वरवाद का विश्वास (अक़ी–दए–तौहीद):–

अल्लाह की अन्तिम पुस्तक "पवित्र कुर्आन" सब से पहले शुद्ध विश्वास का निर्देश देता है फिर जग के निर्माता की कृतज्ञता प्रकट करने तथा उसके अंतर्गत उपासनाओं का आदेश देता है और उसके अंतर्गत हम को जग के निर्माता के महान व्यक्तित्व के संबंध में तथा इस सृष्टि की रचना के उद्देश्य के विषय में आवश्यक बातें बताता है सर्व प्रथम वह अपनी पवित्रता तथा महानता का वर्णन करते हुए अपनी बताई हुई बातों को सत्य मानने का आदेश देता है जैसा कि निम्नलिखित कुर्आनी आयत से सिद्ध होता है अनुवादः–

"अल्लाह की तस्बीह करती है हर वो चीज़ जो आकाशों और धरती में है। वही प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।

आकाशों और धरती की बादशाही उसी की है। वही जीवन प्रदान करता है और वही मृत्यु देता है और उसे हर चीज़ पर सामर्थ्य है।

वही आदि है और अन्त भी और वही व्यक्त है और अव्यक्त भी। और वही हर चीज़ को जानता है।

वही वह है जिस ने आकाशों और धरती को 6 दिनों में पैदा किया, फिर सिंहासन (अर्श) पर विराजमान हुआ। वह जानता है जो कुछ धरती में प्रवेश करता है और जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आकाश से उतरता है और जो कुछ उस में चढ़ता है। और तुम जहां कहीं भी हो, वह तुम्हारे साथ है। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो।

आकाशों और धरती की बादशाही उसी की है और अल्लाह ही की ओर सारे मामले पलटते हैं।

वह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है। वही सीनों में छिपी बातों तक को जानता है।

ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और उस में से खर्च करो जिस का उस ने तुम्हें अधिकारी बनाया है। तो तुम में से जो लोग ईमान लाए और उन्होंने खर्च किया, उनके लिए बड़ा प्रतिदान है।"

(अलहदीदः 1–7)

दूसरी जगह आया है, अनुवादः *"यदि तुम उन से पूछो कि आकाशों और धरती को किस ने पैदा किया? तो वे अवश्य कहेंगे कि "अल्लाह ने" कहो "प्रशंसा भी अल्लाह ही के लिए है।" वरना उन में से अधिकांश जानते नहीं।*

आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का है। निस्संदेह अल्लाह ही निस्पृह, स्वतः प्रशंसित है।

धरती में जितने वृक्ष हैं, यदि वे कलम हो जाएं और समुद्र उस की स्याही हो जाए, उसके बाद सात और समुद्र हों तब भी अल्लाह के बोल समाप्त न हो सकेंगे। निस्संदेह अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी है।

तुम सब का पैदा करना और तुम सब का जीवित करके पुनः उठाना तो बस ऐसा है, जैसे एक जीव का, अल्लाह तो सब कुछ सुनता, देखता है।"

(लुकमानः 25–28)

पहली वास्तविकता तो पवित्र कुर्आन हम को बताता है वह यह कि समस्त सृष्टि का निर्माता केवल एक है और वह सर्वश्रेष्ठ है जैसा कि नीचे लिखी आयत में बताया गया है, अनुवादः–

"आप कहिए (पूछिये) आकाशों और धरती का रब कौन है? आप ही कहिए (उत्तर दीजिए) अल्लाह!" आप कहिए फिर क्या तुम ने उस से हट कर दूसरों को अपना संरक्षक बना रखा है, जिन्हें स्वयं अपने भी किसी लाभ का न अधिकार प्राप्त है और न किसी हानि का?" आप कहिए "क्या अंधा और आंखों वाला दोनों बराबर होते हैं या यह कहिए कि क्या अंधेरा और उजाला बराबर होते हैं? या जिन को अल्लाह का सहभागी ठहराया है, उन्हों ने भी कुछ पैदा किया है, जैसा कि अल्लाह ने पैदा किया है जिस के कारण उन के पैदा करने का मामला इन के लिए गडमड हो गया? कहिए हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह है और वह अकेला है, सब पर प्रभावी!"

(अर–रअ्दः16)

और एक जगह आया है अनुवादः–

"अतः अब अल्लाह की तस्बीह करो, जब कि तुम शाम करो और जब सुबह करो! और उसी के लिए प्रशंसा है आकाशों और धरती में और पिछले पहर और जब तुम पर दोपहर हो।

वह जीवित को मृत से निकालता है और मृत को जीवित से, और धरती को उस की मृत्यु के पश्चात जीवन प्रदान करता है। इसी प्रकार तुम भी निकाले जाओगे।

और यह उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर थोड़े दिनों बाद तुम मानव हो कर, फैलते जा रहो।

और यह भी उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हारी ही सहजाति से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उन के पास शांति प्राप्त करो। और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा की। और निश्चय ही इस में बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सोच–विचार करते हैं।

और उस की निशानियों में से आकाशों और धरती का सृजन और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों की विभिन्नता भी है। निस्संदेह इस में ज्ञानवालों के लिए बहुत सी निशानियां हैं। और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन का सोना,

लेटना और तुम्हारा उसके अनुग्रह को तलाश करना भी है। निश्चत ही इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।

और उन निशानियों में से यह भी है कि वह तुम्हें बिजली की चमक, भय और आशा उत्पन्न करने के लिए दिखाता है। और वह आकाशा से पानी बरसाता है। फिर उस के द्वारा धरती को उसके निरजीव हो जाने के पश्चात जीवन प्रदान करता है। निस्संदेह इस में बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।

और उस की निशानियों में यह भी है कि आकाश और धरती उस के आदेश से कायम हैं। फिर जब वह तुम्हें एक बार पुकार कर धरती में से बुलाएगा, तो क्या देखोगे कि सहसा तुम निकल पड़े।

आकाशों और धरती में जो कुछ भी है उसी का है। प्रत्येक उसी के निष्ठावान आज्ञाकारी हैं।

वही जो सृष्टि का आरंभ करता है। फिर वही उस की पुनरावृत्ति करेगा। और यह उस के लिए अधिक सरल है। आकाशों और धरती में उसी की मिसाल (गुण) सर्वोच्च है। और वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।" (अर–रूमः 17–27)

एक और जगह फरमाया अनुवादः *"और मैंने जिनों और इन्सानों को इसी लिए पैदा किया है कि वह मेरी उपासना किया करें, मैं उन से सृष्टि की आजीविका की मांग नहीं करता और न यह मांग करता हूं कि वह मुझ को खिलाया करें, अल्लाह स्वयं ही सब को आजीविका देने वाला सर्व शक्तिमान और अत्यन्त बलवान है।"*

(अज़–जारियातः56–58)

यह धरती जिस पर हम सब मानव जाति बसे हुए हैं वह इस उद्देश्य से बनाई गई है कि इस पर मनुष्य उक्त कुर्आनी आदेशें का पालन करे इस आज्ञा पालन में मनुष्य के लिए सर्व प्रथम इस सृष्टि के निर्माता तथा विधाता पर ईमान (विश्वास) लाना है और उस ईमान की जो क्रियात्मक मांग है उसको पूरा करना है उस ईमान और उस की क्रियात्मक मांगों को जग के निर्माता में अपने प्रिय पैगम्बरों (सन्देष्टाओं) पर अपनी पुस्तकें उतार कर अपने बन्दों को बताया और समझाया है और इसी के साथ यह भी स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह तआला ने मानव जाति को इस संसार में इस लिए पैदा किया है कि वह उन की परीक्षा ले कि वह आज्ञाकारी रहेंगे या अवज्ञाकारी बन जाएंगे तथा इस परीक्षा के अनुकूल इस सांसारिक जीवन के अन्त के पश्चात जो शाश्वत जीवन आरम्भ होगा उसमें उस को उस के कर्मों के अनुसार प्रतिफल देगा इस प्रकार उस अगले जीवन में कोई पुरस्कृत होगा तो कोई दण्डित होगा अल्लाह तआला फरमाता है अनुवादः *"बड़ा बरकत वाला है वह जिस के हाथ में भारी बादशाही है और वह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है जिसने पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा*

करे कि तुम में कर्म की दृष्टि से कौन सब से अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली बड़ा क्षमाशील है।''

(अल मुल्कः1–2)

दूसरी जगह फरमाता है अनुवादः *''वही है जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है और तुम्हारे लिए आकाश से रोज़ी उतारता है, किन्तु याददिहानी तो बस वही स्वीकार करता है जो उस की ओर रुजु करे।*

अतः तुम अल्लाह ही को, दीन को उसी के लिए विशुद्ध करते हुए पुकारो, यद्यपि इनकार करने वालों को अप्रिय ही लगे।

वह ऊँचे दर्जों वाला, सिंहासन (अर्श) वाला है, अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपने हुक्म से रूह उतारता है, ताकि वह मुलाकात के दिन से सावधान कर दें।

जिस दिन वे खुले रूप में उसके सामने उपस्थित होंगे, उन की कोई चीज़ अल्लाह से छुपी न रहेगी, ''आज किस की बादशाही है?'' ''अल्लाह की, जो अकेला सब पर काबू रखने वाला है।'''

आज प्रत्येक व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला दिया जाएगा। आज कोई जुल्म न होगा। निश्चय ही अल्लाह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है।''

(अल मोमिनः 13–17)

एक और जगह फरमाता है अनुवादः *''आप कह दीजिए क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब ढूंढू जब कि हर चीज़ का रब वही है।'' और यह कि प्रत्येक व्यक्ति जो कुछ कमाता है, उस का फल वही भोगेगा, कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर तुम्हें अपने रब की ओर लौट कर जाना है। उस समय वह तुम्हें बता देगा, जिस में परस्पर तुम्हारा मतभेद और झगड़ा था।*

वही है जिस ने तुम्हें धरती में खलीफ़ा उत्तराधिकारी बनाया और तुम में से कुछ लोगों के दर्जे कुछ लोगों की अपेक्षा ऊँचे रखे, ताकि जो कुछ उस ने तुम को दिया है उस में वह तुम्हारी परीक्षा ले। निस्संदेह तुम्हारा रब जल्द सजा देने वाला है। और निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।''

(अल–अनआमः164–165)

अल्लाह तआला की प्रतिभा हर वस्तु में विद्यमान है, उसी में हर वस्तु को अस्तित्व प्रदान किया है और हर वस्तु में एक विशेष गुण रखा तथा हर एक का कार्य नियुक्त किया, मनुष्य जो इस सृष्टि में और इस धरती के जीवधारियों में सबसे उच्च तथा अधिकार प्राप्त मालूम होता है वह भी अपने निर्माता के समक्ष मशीन के एक पुर्जे की भांति विवश है उस मशीन का चलाने वाला अर्थात निर्माता जिस प्रकार चलाएगा उसी प्राकर चलने पर विवश है यहां तक कि खाने का लुक्मा मुंह में डालने के बाद मनुष्य के अधिकार में नहीं रहता अल्लाह तआला ने इस का जो नियम बना दिया है उसी नियम के अनुसार वह लुक्मा पेट में जाता है आंतों से गुजरता हुआ अपना कार्य सम्पन्न कर के बाहर आ जाता है हम को जो ज्ञान, प्रदान किया गया है उस में केवल इतना अधिकार दिया गया है कि हम जान लें कि किस प्रकार का लुक्मा हो

और उस में क्या गुण हों ताकि उस को मुख से आमाशय में उतरने में कोई रुकावट न पड़े और आमाशय के अन्दर पच कर अपना कार्य पूरा कर सके और उस में जिस भाग को बाहर आना हो वह सरलता से बाहर आ जाए, इसी प्रकार यह मनुष्य अल्लाह की दी हुई योग्यताओं के साथ अपने विषय मे केवल इतना अधिकार रखता है कि वह अल्लाह के नियमों के अनुसार आजीविका खाए जीवित रहे स्वस्थ रहे इस प्रक्रिया में हमारे शरीर के अंग अपना अपना काम नियमानुसार करते आ रहे हैं जब हम इन नियमों का विरोध करते हैं जैसे ऐसे लुक्मे खाते हैं जिन से हम को हानि पहुंचे तो परेशनी में पड़ जाते हैं, अर्थात बीमार हो जाते हैं, फिर उस बीमारी को दूर करने के जो नियम अल्लाह ने दवा इलाज द्वारा बनाए हैं उन से लाभ उठाते हुए बीमारी को दूर करते हैं, जिस वस्तु में अल्लाह ने जो गुण रखा है उस से लाभ उठाते हैं, दूध से हम दूध ही का लाभ उठा सकते हैं, संखया से हम को संखया की हानि उठाना पड़ती है और कभी वह औषधि का लाभ भी देती है।

❖❖❖

धन का शुद्ध प्रयोग.....

लेकिन आखिरत (प्रलोक) में यह बड़ी आपत्ति (मुसीबत) बन कर सामने आता है और सच यह है कि हराम कमाई करने वालों का परिणाम प्रायः इस संसार में भी बुरा होता है।

कभी ऐसा भी होता है कि माल वैध कमाया जाता है परन्तु खर्च करने में असावधानी होती है और वह गलत जगह खर्च होता है। जैसे हलाल माल से नाजाइज काम करना गलत रस्मों में खर्च करना, घूस देना ऐसा करना भी ईमान को खराब करना है। इस तरह माल नाजाइज़ कामों में खर्च करने में आखिरत तो बरबाद होती ही है सांसारिक जीवन भी बिगड़ता है।

ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिलेंगे और हर परिवार में मिलेंगे कि कल के धनवान आज के रंक हैं कल जिन के यहां खुशी के बाजे बजते थे आज उन को कोई पूछने वाला नहीं, कल जिन के द्वार पर हाथी बंधे हुए थे आज उनका हाल यह है कि उनके पैरों में जूते तक नहीं यह सब धन का निरादर करने और उस के गलत जगह पर खर्च करने का नतीजा है। आज भी अगर आप देखें तो अपने परिवार की शादियों के रस्म व रवाज, अक़ीक़ा, खत्ना, बिस्मिल्लाह की रस्म, मंगनी और कई दूसरे अवसरों पर यह फुजूल खर्चियां साफ देखेंगे। इसलिए हम को चाहिए कि हम अपने समाज में विशेष कर अपने परिवार में इस प्रकार की फुजूल खर्चियों को दूर करने का भले ढंग से प्रयास करें, प्रयास करना अपना काम है सफलता अल्लाह के अधिकार में है, अगर हम प्रयास करेंगे तो अल्लाह हमारी मदद करेगा। प्रसिद्ध कहावत है "हिम्मते मर्दां मददे खुदा"। ◆◆◆

–देवनागरी लिपि में उर्दू

इस्लाम अल्लाह के हुक्म का नाम है

–हज़रत मौलाना अली मिया रह0 –हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

मेरे भाइयो! अस्ल चीज़ ये है कि हमें अपनी ज़िन्दगी बदलनी चाहिए, अपनी ज़िन्दगी को क़ानूने इलाही के मुताबिक़ बनाना चाहिए, जिसके बग़ैर इज़्ज़त, सुकून और इतमीनान की सूरत नहीं, हज़ार जतन कर लो, किसी भी पार्टी में शामिल हो जाओ, कितने ही बड़े सरमायादार हो जाओ, हक़ीक़ी इज़्ज़त नहीं मिलेगी, हक़ीक़ी इतमीनान व सुकून नहीं नसीब होगा, जब तक क़ानूने इलाही के मुताबिक़ ज़िन्दगी न ढ़ालोगे। लिहाज़ा इस्लामी अ़क़ाइद पर दिल जमई से जमो और इस्लामी अहकाम पर पूरी तरह अमल करो, और उसके बताए हुए जाइज़ को जाइज़ और नाज़इज़ को नाजाइज़ समझो।

याद रखो! अगर सल्तनत ख़ुदा की ना फरमानी से मिलती हो तो उसे ठुकरा दो, उस पर लानत भेजो, अगर ख़ुदा की इताअ़त में सल्तनत व दौलत जाती है तो ख़ुदा का शुक्र अदा करो। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने यही किया, क्योंकि इस्लाम अल्लाह के हुक्म का नाम है, वह किसी क़ौमियत या किसी ख़ानदानी निस्बत का नाम नहीं। ◆◆◆

नारी का पर्दा

हर नारी का देखे मुख़ड़ा – जिसके मन में आता है
वही मनुष्य शरई पर्दे को – अत्याचार बताता है
पतिकामा के श्रृंगार का – रक्षक यह पर्दा ही है
बुरी नज़र से नारी को – यह पर्दा सदा बचाता है
माँ बेटी और प्रेम बहिन का – पाप रहित यह होता है
मौसी और फूफी का भी – प्रेम इसी में आता है
कला प्राप्ति और शिक्षा में – यह पर्दा नहीं रुकावट है
पर्दे वाली नारी को भी, – लिखना पढ़ना आता है
भाँति-भाँति के खाने बनाना – कपड़े सीना और पिरोना
देख रेख बच्चों की करना – कला में यह भी आता है
घर को स्वच्छ बनाने को – और घर के बरतन धोने को
सस्ती नारी नौकर रखना – अत्याचार में आता है
दंपति हों सरकारी नौकर – पर पत्नी हो सेवा में
वेतन उस को थोड़ा देना – शोषण यह कहलाता है
मर्द कमाये बीवी खाये – बीवी बच्चों को बहलाए
घर का पूरा खर्च उठाना – मर्द के ज़िम्मे आता है
घर का झाड़ू पोछा करना – बरतन धोना खाना बनाना
घर वालों को खाना खिलाना – बीवी पर यह आता है
समय पे अपने बच्चे पढ़ाए – मैले कपड़े धोए धुलाए
अपने घर के सिये वह कपड़े – सीना उस को आता है
पति के बूढ़े माता- पिता को – समय पे खाना पानी देना
यह भी बीवी को है करना – ज्ञानी यही बताता है
घर की रानी हो कर के क्यूं – करे गुलामी औरों की
करे नौकरी औरों की – यह रानी को कब भाता है

शिक्षकों की सेवा में

—शिक्षक अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी

शिक्षा जगत में देखो, विदाई नहीं होती ।
विद्वान है तो ज्ञान से, जुदाई नहीं होती ॥
शिक्षा वह प्रक्रिया है, जो उम्र भर चले ।
इस प्रेम जाल में तो, रिहाई नहीं होती ॥
ज्ञानी जो ज्ञान बांटे गा, तो ज्ञान बढ़ेगा ॥
बांटे नहीं तो शून्य है, भर पाई नहीं होती ॥
मालिक ने दिया है, तुम्हें एक अच्छी अमानत ।
हक़दार को देने पर, रुसवाई नहीं होती ॥
मालिक है एक सब का, हम सब उसी के बन्दे ।
रब दिल में बस गया तो, जुदाई नहीं होती ॥
शिक्षक समाज सेवक है, सेवक ही रहेगा ।
सेवा की भावना से, जुदाई नहीं होती ॥
शिक्षा भी दीक्षा भी, गुरुजन का खास गुण है ॥
शुभ कर्म के बिना तो, कमाई नहीं होती ॥
आशीर्वाद चाहता, विद्वानों का सिद्दीक़ी ।
आशीर्वचन से बढ़ कर कमाई नहीं होती ॥

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये।

पूरब में लो दिखा उजाला, यानि दिन है आने वाला

پورب میں لو دکھا اجالا، یعنی دن ہے آنے والا۔

जागो बच्चो आँखें खोलो, बिस्तर छोड़ो लो मुँह धो लो

جاگو بچوں آنکھیں کھولو، بستر چھوڑو لو منھ دھولو۔

बाथरूम में ड्यूटी दो वुज़ू करो और फ़ज्र पढ़ो

باتھ روم میں ڈیوٹی دو، وضو کرو اور فجر پڑھو۔

जो भी मिले तुम करो सलाम, यही सिखाता है इस्लाम

جو بھی ملے تم کرو سلام، یہی سکھاتا ہے اسلام۔

चन्द मिनट तुम दौड़ लगाओ, ताकि सेहत तुम अच्छी पाओ

چند منٹ تم دوڑ لگاؤ، تاکہ صحت تم اچھی پاؤ۔

खाओ नाश्ता बस्ता उठाओ, बिस्मिल्लाह पढ़ मकतब जाओ

کھاؤ ناشتہ بستہ اٹھاؤ، بسم اللہ پڑھ مکتب جاؤ۔

पढ़ने में जी ख़ूब लगाओ, जाँच में ताकि अव्वल आओ

پڑھنے میں جی خوب لگاؤ، جانچ میں تاکہ اوّل آؤ۔

मकतब से जब घर को आओ ज़ुहृ पढ़ो और खाना खाओ

مکتب سے جب گھر کو آؤ، ظہر پڑھو اور کھانا کھاؤ۔

थोड़ी देर तुम करो आराम, भूलो न तुम रब का नाम

تھوڑی دیر کرو آرام، بھولو نہ تم رب کا نام۔

नबी पे अपने पढ़ो दुरूद, रहमत तुम पर करे वदूद

نبی پے اپنے پڑھو درود، رحمت تم پر کرے ودود۔